बी. ए. एवं बी. कॉम. १ : हिंदी (अनिवार्य)

प्रश्नपत्र क्र.- A : सत्र-१ : **सृजनात्मक लेखन**

प्रश्नपत्र क्र.- B : सत्र-२ : **व्यावहारिक लेखन**

(शैक्षिक वर्ष २०१९-२० से)

Scanned by CamScanner

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

दूरशिक्षण केंद्र

प्रश्नपत्र क्रमांक–A : सत्र–1

सृजनात्मक लेखन

प्रश्नपत्र क्रमांक–B : सत्र 2

व्यावहारिक लेखन

(शैक्षिक वर्ष 2019-20 से)

बी.ए. एवं बी.कॉम. भाग 1 हिंदी (अनिवार्य)

Scanned by CamScanner

© कुलसचिव, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
प्रथम संस्करण : 2019
बी.ए. एवं बी.कॉम. भाग 1 (हिंदी : अनिवार्य)
सभी अधिकार विश्वविद्यालय के अधीन। शिवाजी विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी सामग्री की नकल न करें।

प्रतियाँ : 300

■

प्रकाशक :
डॉ. व्ही. डी. नांदवडेकर
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

मुद्रक :
श्री. बी. पी. पाटील
अधीक्षक,
शिवाजी विश्वविद्यालय मुद्रणालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

ISBN- 978-93-89327-22-9

★ दूरशिक्षण केंद्र और शिवाजी विश्वविद्यालय की जानकारी निम्नांकित पते पर मिलेगी-
शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर, कोल्हापुर-416 004. (भारत)
★ दूरशिक्षण विभाग-विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के विकसन अनुदान से इस साहित्य की निर्मिति की है।

Scanned by CamScanner

इकाई लेखक

लेखक	इकाई
हिंदी (अनिवार्य) प्रश्नपत्र क्रमांक–A : सत्र 1 सृजनात्मक लेखन	
★ **डॉ. बी. एस. सातपुते** मिरज महाविद्यालय, मिरज	1
★ **डॉ. दिपक तुपे** विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापूर	2
★ **डॉ. भारत खिलारे** छत्रपती शिवाजी कॉलेज, सातारा	3
★ **प्रा. डॉ. भानुदास भिकाजी आगेडकर** किसनवीर महाविद्यालय, वाई, जि. सातारा	4
हिंदी (अनिवार्य) प्रश्नपत्र क्रमांक–B : सत्र 2 व्यावहारिक लेखन	
★ **श्रीमती एस. पी. वाघ** आर्टस, कॉमर्स महाविद्यालय, पलूस	1
★ **श्रीमती आर. के. मुल्ला** डी. पी. भोसले कॉलेज, कोरेगाव	2
★ **प्रा. के. बी. माने** बळवंत कॉलेज, विटा	3
★ **डॉ. जी. एस. भोसले** डी. पी. भोसले कॉलेज, कोरेगांव	4

■ सम्पादक ■

डॉ. बी. एस. सातपुते
मिरज महाविद्यालय,
मिरज

डॉ. आर. पी. भोसले
कला, वाणिज्य महाविद्यालय,
पुसेगाव

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

इकाई		पृष्ठ
	हिंदी (अनिवार्य) पेपर क्रमांक–A : सत्र 1 सृजनात्मक लेखन	
1.	हिंदी भाषा तथा व्याकरण : सामान्य परिचय	1
2.	कविता, कहानी तथा यात्रा वृत्तांत लेखन	60
3.	रिपोर्ताज तथा साक्षात्कार लेखन	91
4.	दृश्य साहित्य लेखन तथा पत्रकारिता : स्वरूप, महत्त्व तथा उपयोगिता	109
	हिंदी (अनिवार्य) पेपर क्रमांक–B : सत्र 2 व्यावहारिक लेखन	
1.	हिंदी के विविध रूप तथा प्रयोजनमूलक हिंदी	121
2.	पत्राचार : सामान्य परिचय, रोजगार प्राप्ति हेतु आवेदन पत्र	141
3.	अनुवाद और विज्ञान स्वरूप, प्रकार, महत्त्व उपयोगिता	161
4.	समाचार लेखन तथा पत्रकारीता, समाचार लेखन और पत्रकारीता	187

Scanned by CamScanner

इकाई–2

कविता, कहानी तथा यात्रा वृत्तांत लेखन

कविता, कहानी तथा यात्रा वृत्तांत लेखन : स्वरूप, महत्त्व तथा उपयोगिता
कविता, कहानी तथा यात्रा वृत्तांत के क्षेत्र : सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय–विवेचन

2.3.1 कविता, कहानी तथा यात्रा वृत्तांत लेखन : स्वरूप, महत्त्व तथा उपयोगिता

2.3.1.1 कविता लेखन का स्वरूप

2.3.1.2 कविता लेखन का महत्त्व तथा उपयोगिता

2.3.1.3 कहानी लेखन का स्वरूप

2.3.1.4 कहानी लेखन का महत्त्व तथा उपयोगिता

2.3.1.5 यात्रा वृत्तांत लेखन का स्वरूप

2.3.1.6 यात्रा वृत्तांत लेखन का महत्त्व तथा उपयोगिता

2.3.2 कविता, कहानी तथा यात्रा वृत्तांत के क्षेत्र–सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक

2.3.2.1 कविता का सामाजिक क्षेत्र

2.3.2.2 कविता का राजनीतिक क्षेत्र

2.3.2.3 कविता का सांस्कृतिक क्षेत्र

2.3.2.4 कहानी का सामाजिक क्षेत्र

2.3.2.5 कहानी का राजनीतिक क्षेत्र

2.3.2.6 कहानी का सांस्कृतिक क्षेत्र

Scanned by CamScanner

2.3.2.7 यात्रा वृत्तांत का सामाजिक क्षेत्र

2.3.2.8 यात्रा वृत्तांत का राजनीतिक क्षेत्र

2.3.2.9 यात्रा वृत्तांत का सांस्कृतिक क्षेत्र

2.4 सारांश

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.6 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न

2.7 स्वयं-अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद-

- कविता के स्वरूप से अवगत होंगे।
- कविता का महत्त्व एवं उपयोगिता जान जाएँगे।
- कविता के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्र से परिचित होंगे।
- कहानी का स्वरूप जान जाएँगे।
- कहानी का महत्त्व एवं उपयोगिता से अवगत होंगे।
- कहानी के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्र से वाकीब होंगे।
- यात्रावृत्त के स्वरूप से अवगत होंगे।
- यात्रावृत्त के महत्त्व और उपयोगिता से परिचित होंगे।
- यात्रावृत्त के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्र समझ जाएँगे।

Scanned by CamScanner

2.2 प्रस्तावना

साहित्य शब्द से मानव जीवन की अभिव्यक्ति और समग्र ज्ञान की चेतना का बोध होता है। सम्रग जीवन और ज्ञान को अपनाकर उसे शब्द-चित्रों द्वारा सजाने की शक्ति किसी एक व्यक्ति में नहीं होती है। इसी कारण हर रचनाकार अपनी रचना में अलग-अलग देश, काल और मानव जीवन की विभिन्न प्रवृत्तियाँ का चित्रण अपने-अपने तरीके से करता है। साहित्य में वर्णित वैषम्य के कारण ही साहित्य का कोई एक स्वरूप नहीं होता है। साहित्य की कोई निश्चित व्याख्या नहीं है। रचनाकार मानव स्वभाव की विभिन्न प्रवृत्तियाँ, विभिन्न विधाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। इसमें कविता, कहानी और यात्रा वृत्तांत मुख्य है। इन विधाओं की अपनी अलग-अलग पहचान है। मानव जीवन की हर दशा और दिशा इन विधाओं में केंद्रीभूत है। यही वजह है कि कविता, कहानी और यात्रा वृत्तांत के लेखन का महत्त्व तथा उपयोगिता मानव जीवन के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में आज भी बरकरार है। मानव जीवन का समग्रालोचन करनेवाली इन विधाओं का विवेचन-विश्लेषण निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत हैं-

2.3 विषय विवेचन

2.3.1 कविता, कहानी तथा यात्रा वृत्तांत लेखन : स्वरूप, महत्त्व तथा उपयोगिता

2.3.1.1 कविता लेखन का स्वरूप :-

कविता साहित्य की वह विधा है; जिसमें किसी मनोभावों को कलात्मक रूप में किसी भाषा के द्वारा सजाया जाता है। कविता से मनुष्य के भावों एवं विचारों की रक्षा होती है। संसार की किसी वस्तु या चीज को कविता इस तरह से व्यक्त करती है, मानो वे वस्तु एवं चीज आँखों के सामने नृत्य करने लगते हैं और मूर्तिमान दिखाई देने लगते हैं। उसे शब्दबद्ध करने के लिए बुद्धि से काम लेना पड़ता है। जब मनोवेगों का प्रवाह जोर से बहने लगता है तब कविता का जन्म होता है। कविता मनोभावों को उच्छवासित करके मानव जीवन में नव चैतन्य डाल देती है। कवि सृष्टि सौंदर्य से मोहित होकर काव्य सृजन करता है। कविता की इसी प्रेरणा से समाज की कार्य प्रवृत्ति बढ़ जाती है। यही कार्य प्रवृत्ति बढ़ाने के लिए मन में वेगों का आना आवश्यक है। अगर दारिद्रय और सूखे से आकुलते बच्चे के पास बैठी माता का आर्त्तस्वर सुनाई दिया जाए तो वह मनुष्य क्रोध एवं करुणा से विव्हल हो उठेगा। इसका उपाय करने के लिए वह कम-से-कम संकल्प तो अवश्य करेगा। इस तरह का दृश्य केवल काव्य के द्वारा ही खड़ा किया जा सकता है।

Scanned by CamScanner

वाचिक परंपरा के रूप में जन्मी कविता ने आज लिखित रूप धारण कर लिया है। कविता के मूल में संवेदना होती है, राग तत्त्व होता है, लयात्मकता होती है, संगीतात्मकता होती है। दरअसल काव्य संवेदना समस्त समष्टि से जुड़ने और उसे अपना बना लेने का बोध देती है। अच्छी कविता बार-बार पढ़ने का न्यौता देती है, बिलकुल संगीत की तरह। जब तक आप दूर हो तो रहस्यमयी लगेगी और पास आते ही उसे बार-बार और देर तक सुनने का मन करेगा। अच्छी कविता आप से सवाल करती है। बार-बार पढ़ने के बावजूद आपकी स्मृति को कुरेदती है, सोचने और विचार करने के लिए मजबूर कर देती है। कविता की अनोखी दुनिया का सबसे पहला उपकरण शब्द है। शब्द के मेलजोल से बनती है कविता। दरअसल शब्दों से जुड़ना कविता की दुनिया में प्रवेश करना है। कवि शब्दों के माध्यम से कविता का सृजन करता है। वैसे देखा जाए तो रचनात्मकता हर व्यक्ति के अंदर छिपी होती है; आवश्यकता है उसे तराशने की।

वस्तुत: साहित्य शब्द में बहुत ही व्यापक संकल्पना निहित है। इससे समस्त मानव जीवन की अभिव्यक्ति और समग्र ज्ञान की चेतना का बोध होता है। समग्र मानव जीवन और समग्र ज्ञान को समाहित कर शब्द चित्रों में उकेरने की शक्ति किसी एक व्यक्ति, किसी एक समाज में संभव नहीं होती। यही वजह है कि हर व्यक्ति, हर समाज अपने-अपने ढंग से साहित्य का सृजन करता रहता है। इसलिए कविता लेखन का निश्चित ढाँचा या स्वरूप नहीं है; क्योंकि कभी कविता छंदोबद्ध रचना हुआ करती थी, लेकिन यह मान्यता आज धूमिल पड़ी हुई दिखाई देती है अर्थात् कविता छंदों में बद्ध होनी चाहिए। यह बंधन धीरे-धीरे ढिला पड़ गया। साहित्य शब्द समाज में विभिन्न अर्थों से प्रचलित हैं। अंग्रेजी में Literature के रूप में प्रचलित है, जो 'लेटर' धातु से बना है; जिसका अर्थ है- अक्षर। मराठी में साहित्य का अर्थ सामान के रूप में प्रचलित है। लेकिन यहाँ उसका अर्थ शब्दों में छिपा ज्ञान बोध या भाव की अनुभूति से संबंधित है, जिसे साहित्य की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। साहित्य शब्द की व्युत्पत्ति है- साहित्य= सहित + यत् प्रत्यय। साहित्य का अर्थ है शब्द और अर्थ के यथावत सहभाव का होना। यह सहभाव सिर्फ शब्द और अर्थ का नहीं है। कई विद्वानों ने साहित्य शब्द की व्युत्पत्ति हित के साथ मानी है। संस्कृत में एक उक्ति है- 'सहितस्य: भाव:।' जो भाव से युक्त है वही साहित्य है। साहित्य शब्द संस्कृत के 'सहित' शब्द से बना है। सहित का अर्थ विभिन्न वस्तुओं का मेल-मिलाप है। यह मेल-मिलाप किसी और का नहीं, कवि के भावों और विचारों का है। संस्कृत में साहित्य के लिए काव्य शब्द का प्रयोग हुआ करता था, मगर सातवीं-आठवीं शताब्दी में काव्य शब्द साहित्य के रूप में प्रचलित हुआ; जो गद्य-पद्य की सारी विधाओं से संबंधित है। कविता में शब्द कवि-कर्म से संबंध रखता है। 'कम' धातु कवि के बोलने, कलरव करने, आकाश, व्याप्ति का परिचायक है। इसलिए तो कहा जाता है- 'जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि।' कवि-कर्म को संस्कृत आचार्यों ने असाधारण, अलौकिक

Scanned by CamScanner

और आनंदकर माना है। विधाता की सृष्टि नियमों में बद्ध है, लेकिन कवि की सृष्टि नियमों में बद्ध नहीं है। कवि कार्य-कारण भाव की श्रृंखला में मुक्त, आनंदमयी रचना का सृजन करता रहता है। कविता रसमय, रमणीय, लयात्मक, संगीतमयी, संस्मरणीय और वाणीमय होती है। ऐसे वाणीमय साहित्य को 'वाङ्मय' कहते हैं; जो साहित्य का पर्यायवाची शब्द है। पहले साहित्य और काव्य शब्द एक-दूसरे के विकल्प या पर्याय हुआ करते थे। आज साहित्य ने विस्तृत अर्थ ग्रहण कर लिया है, जिसमें साहित्य की गद्य और पद्य की सारी विधाएँ समाहित होती हैं।

काव्य लेखन मूलत: कवि का निजी कर्म है। जब निरंतर चिंतन-मनन से कवि की भावनाओं के प्रबल आवेग का उद्रेक होता है, तब शब्दों के माध्यम से कविता मुखरित होती है। नए बिंब, विचार, दृश्य, अनुभूति और छंद, संगीतात्मकता आदि काव्य के मूल तत्त्व माने जाते हैं। अरस्तू अनुकरण के सिद्धांत को काव्य की आत्मा मानते रहें। उनके अनुसार--वास्तविक जगत्, अनुकृति की भावना, अनुकृति में शब्द, छंद और संगीतात्मकता काव्य के मूल तत्त्व है। विलियम शेक्सपियर काव्य में कल्पना को प्रधानता देते हैं; क्योंकि कवि कल्पना ही आखिरकार अज्ञात वस्तुओं और विचारों को आकार देती है। कवि हृदय में भावनाओं का प्रबल आवेग ही कविता निर्मिति का प्रधान कारण है। विलियम वर्डस्वर्थ के मतानुसार-काव्य शांति के समय में स्मरण किए हुए प्रबल मनोवेगों का स्वच्छंद प्रवाह है। वर्डस्वर्थ भावों को प्रधानता देते हैं। सिंगमंड फ्रायड काव्य का संबंध मानव मन की कुंठाओं से जोड़ते हैं। उनका कहना था कि मानव मन की दमित एवं कुंठित इच्छाएँ काव्य के माध्यम से प्रस्फुटित होती है। कॉलरिज कविता में अभिव्यक्ति को प्रधानता देते हुए कविता को उत्तमोत्तम शब्दों का उत्तमोत्तम क्रमविधान मानते हैं। जॉन मिल्टन ने कविता को सरल, प्रत्यक्षमूलक और रागात्मक कहा है। आचार्य विश्वनाथ रसयुक्त वाक्य को काव्य मानते हैं। पंडितराज जगन्नाथ ने रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करनेवाले शब्दों को काव्य कहा है। भामह ने शब्द और अर्थ का सहित भाव काव्य माना है। दरअसल कविता में भाव या विचार महत्वपूर्ण होते हैं। डॉ. भगीरथ मिश्र के अनुसार कविता में भाव तत्त्व सबसे अधिक प्रभाव उत्पन्न करने वाला है। भाव कवि की कल्पना का प्रेरक है, छंद के स्वरूप का विधायक और शब्द प्रवाह के उत्स को खोलने वाला है। यह पाठक और श्रोता का भी संस्कार होता है। ऐसा संस्कार केवल अनुभूतियों का प्रदर्शन नहीं करता, वह अपने द्वंद्वं एवं संघर्ष की जटिलता से व्यथित हो उठता, तो कभी उल्लास की भावना से सराबोर हो उठता है और अपने आपको थोड़ी देर के लिए क्यों न हो, विस्मृत कर देता है। ऐसी सत्यता की प्रतिमूर्ति कविता कल्पना और मनोवेगों के द्वारा जीवन को परिभाषित करती है। ऐसी कविता में बिंब, प्रतीक, तुक, लय और भाषा की भूमिका महत्त्व रखती है। ऐसी कविता में बिंबों का निर्माण कुशलता एवं सक्षमता के साथ होना चाहिए; क्योंकि कविता की भावप्रवणता और कलात्मकता बिंबों

Scanned by CamScanner

पर निर्भर करती है। कविता में प्रतीकों का प्रयोग अमूर्त, अश्रव्य, अदृश्य और अप्रस्तृत भावों को मूर्त, श्रव्य, दृश्य और प्रस्तुत बना देता है। कविता की तुक और लय मन के भावों का संप्रेषण और विचारों का भावप्रवण करती है। भाषा में शब्द-संयोजन, शब्द चयन, शब्द समूह का विशेष खयाल रखा जाता है। कविता जनसाधारण की भाषा में हो तो वह विशेष भाती है। छंद, अलंकार, गुण और भाषा कविता को प्रभावी एवं रमणीय बना देते हैं। आज कविता निराकार वस्तुओं को आकार देती है, दमित, कुंठित भावों को अभिव्यक्ति देती है, तथ्यों को चित्रमय बना देती है, पात्रों के व्यक्तित्व को उभारती है, जीवन के अनुभव एवं ज्ञान को निश्चित रूप देती है। ऐसा बिंबधर्मी, कल्पनामयी, चित्रमयी रूप पाठकों को वास्तविकता का एहसास दिलाता है। काव्य कल्पना और बुद्धि के योग से और अभिव्यक्ति के माध्यम से मानवी भावना को रमणीय बना देता है।

संक्षेप में, कविता भाव या विचार के बिना पूर्णत्व नहीं पाती। कविता लेखन में भाव या विचार ही कार्यरत होते हैं! ये कविता में ही अंतर्निहित होते हैं। कविता में भाव, बुद्धि, कल्पना और शैली का कलापूर्ण समन्वय होना जरूरी है। दरअसल भाव ही कवि की कल्पना का प्रेरक तत्त्व है, जो उसे साक्षात करता है। यदि कविता का विषय सत्य पर आधारित हो, जीवन और जगत् को परिभाषित करनेवाला हो, तो वह जीवन का परमानंद देने में कामयाब दिखाई देता है।

2.3.1.2 कविता लेखन का महत्त्व तथा उपयोगिता :

जिस प्रकार मानव जीवन के विविध क्षेत्रों के महत्त्व तथा उपयोगिता की बात की जाती है, उसी प्रकार कविता के क्षेत्र में भी उसके महत्त्व तथा उपयोगिता की बात की जाती है। यह महत्त्व तथा उपयोगिता केवल नैतिक एवं सामाजिक दृष्टि से नहीं है। यदि ऐसा होता तो दुनिया के नैतिक एवं सामाजशास्त्रीय ग्रंथ विश्व के सर्वोत्कृष्ट साहित्य की कोटि में आ जाते। विश्व की अनेक भाषाओं में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं; जिनमें कई घटना, प्रसंग या पात्रों के क्रिया-कलाप सर्वथा नैतिक नहीं होते और फिर भी उसका सामाजिक मूल्य आज भी बरकरार है। स्त्री-पुरुष या आसुर-देवता के बाह्य क्रिया-कलापों से ही उसकी नैतिकता-अनैतिकता लक्षित होती है। इससे ही पाठक या दर्शक के दिल में नैतिकता को लेकर विश्वास जाग उठता है और अनैतिक को लेकर अविश्वास जाग उठता है।

काव्य में सत्य, शिव और सुंदर का सुखद समन्वय होता है; जिससे स्वस्थ समाज का गठन होता है। इन तीनों का अलग-अलग महत्त्व है। इनमें कई आलोचक सत्य को प्रधानता देते हैं जिसे वैज्ञानिक आधार है, तो कुछ नीतिप्रचारकों ने शिव तत्त्व को आदर प्रदान किया हुआ दिखाई देता है और सौंदर्यवादी आलोचक सौंदर्य को ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्व मानते हैं। काव्य के महत्त्व

Scanned by CamScanner

तथा उपयोगिता में व्यक्ति और उसकी सत्ता पर विचार किया जाना जरूरी है। हर व्यक्ति दोहरा जीवन जीता है। व्यक्ति का एक जीवन व्यक्तिगत जीवन होता है। उस व्यक्तिगत जीवन के मूल्य भी अलग होते हैं। दूसरा महत्त्व इस दृष्टि से है वह समाज की इकाई है और उस समाज में उसका अलग मूल्य होता है। मनुष्य पहले व्यक्ति है, जिसके अपने व्यक्तिगत मूल्य है। वही व्यक्ति किसी मानव समाज का, परिवार, नगर, प्रांत, राष्ट्र या विश्व का सदस्य या नागरिक बन जाता है; तब वह अनायास ही समाज का अंग बन जाता है। उसके प्रत्येक विचार, कर्म और कल्पना में मूल्य का सवाल उपस्थित हो जाता है। व्यक्ति के ये मूल्य समाज, नगर, देश और विश्व के मूल्यों से टकराते हैं। इन मूल्यों के द्वंद्वं या संघर्ष से व्यक्ति का व्यक्तित्व बनता भी है और बिगड़ता भी है। इन विभिन्न मूल्यों के परस्पर टकराव से एक ही मूल्य बच जाता है और वह है- मानवीय मूल्य। यही मानवीय मूल्य या मानवता सर्वोपरि है। यही मूल्य सार्थक एवं सारवान होते हैं; जो कि साहित्य या काव्य के केंद्र में निहित होते हैं। मानवीय मूल्य ही साहित्य के माध्यम से समाज में विवेक पैदा करने की दृष्टि से सहायक होते हैं। इन्हीं मानवीय मूल्यों को बचाना और उसका प्रचार-प्रसार करने की दृष्टि से काव्य का महत्त्व मानना होगा। आखिरकार साहित्य की उपयोगिता इन्सान को इन्सान बनाने में ही तो है। रिचर्ड्स के अनुसार काव्य में ऐसे मूल्य निहित होते हैं जो मनुष्य के मानसिक स्वास्थ्य को ठीक कर देते हैं, उसकी सुरक्षा कर देते हैं। यह बात ठीक वैसी ही है जैसे कोई चिकित्सक व्यक्ति की शारीरिक व्याधि को ठीक कर देता है, उसी प्रकार काव्य मनुष्य के मानसिक स्वास्थ्य को ठीक कर देता है। काव्य मनुष्य की विरोधी भावनाओं, विरोधी अंतरद्वंद्वों के बीच समतुल्य स्थापित कर देता है। हमारे आवेगों और हमारी अभिलाषा की तृष्टि काव्य में निहित शिव तत्त्व कराता है। पाश्चात्य विचारक रिचर्ड्स के अनुसार कला मूल्यवान अनुभव देती है। इस मूल्यवान अनुभव में प्रधान प्रेरणा के साथ-साथ विभिन्न अंगीभूत प्रेरणाओं की तुष्टि होती है। इन प्रेरणाओं में कवि और कवि-कर्म महत्त्वपूर्ण बन जाता है। कवि अपनी अनुभूतियाँ काव्य में इस खूबी के साथ पिरोता है कि वे अनुभूतियाँ चिरस्थायी बन जाती है। काव्य में इन्हीं अनुभूतियों का सर्वोपरि महत्त्व होता है। दरअसल अच्छा वही होता है; जो मूल्यवान है और मूल्यवान वही होता है; जो मन की स्थिति को संतुलित कराता है। काव्य भी आखिकार मन की मानसिक स्थिति को संतुलित करने का ही कार्य करता है। कवि काव्य के माध्यम से समाज में नैतिक, सामाजिक और धार्मिक मूल्यों की स्थापना करता है। इतना ही नहीं, वह समता, बंधुता, मानवता, दया, प्रेम, शांति जैसे जीवनमूल्यों को मनोवैज्ञानिक ढंग से काव्य में इस तरह समाहित करता है कि जिससे स्वस्थ समाज की निर्मिति होती है, मगर इसमें वह काव्य सौंदर्य को कहीं भी हानि नहीं पहुँचाता है।

भावनाओं का आंदोलन करने की ताकत केवल कविता में ही होती है; साहित्य की अन्य

Scanned by CamScanner

विधा में नहीं। आधुनिक युग में बौद्धिक शुष्कता से पीड़ित मानव को काव्य उपवन शीतलता की निरंतर आवश्यकता बनी रहती है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार; ज्यों-ज्यों हमारी वृत्तियों पर सभ्यता के नए-नए आवरण चढ़ते जाएँगे, त्यों-त्यों एक ओर तो कविता की आवश्यकता बढ़ती जाएगी; दूसरी ओर कवि-कर्म कठिन होता जाएगा। सूचना प्रौद्योगिकी के युग में भयावह बात यह है कि कृत्रिम कवियों के बौद्धिक क्रिया-कलापों के चक्कर में कविता विकृत रूप धारण कर लेगी तो उसमें साधारणीकरण का अभाव रहेगा। ऐसी कविता में न तो भावनाओं का प्रबल आवेग होगा और न मानवीय मूल्यों की हिफाजत होगी। इस स्थिति में ऐसा काव्य निर्मित होना चाहिए, जो मानवीय मूल्यों की हिफाजत करता हो, तो कविता का महत्त्व तथा उपयोगिता और भी बढ़ जाएगा, इसमें कोई संदेह नहीं।

2.3.1.3 कहानी लेखन का स्वरूप :

कहानी का संबंध अनादिकाल से मानव सभ्यता के साथ चला आया है। मनुष्य में कहने-सुनने की एक जन्मजात प्रवृत्ति होती है। कहानी अन्य विधाओं की तुलना में अधिक लोकप्रिय विधा है। कहानी आज के युग की सामर्थ्यशाली और महत्त्वपूर्ण विधा है। कहानी का मूल अर्थ है कहना या जो कही जाए, वह कहानी है। वक्ता और श्रोता के बीच कही और सुनी जाने वाली बात मूलत: कहानी ही होती है। किसी घटना या प्रसंग के बारे में एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को कथन करना या कहना कहानी है। कहानी का प्राचीनतम रूप वेदों में भी पाया जाता है, लेकिन गद्य विधा के रूप में उसका विकास उन्नसवीं शती से माना जाता है।

कहानी संक्षिप्त आकार का ऐसा आख्यान है; जो पाठकों पर भावपूर्ण प्रभाव डाल सके। यह मानव जीवन के किसी एक पक्ष, प्रसंग या घटना का ऐसा संवेदनात्मक चित्रण है जिसे अनुभूत तो किया जा सकता है, मगर शब्दों में बाँधना कठिन हो जाता है। यह घटना या प्रसंग मौलिक जगत् या मानसिक जगत् से उठते हैं और कहानी के माध्यम से आकार लेते हैं। कहानी जीवन की एक झलक मात्र है। यही झलक पाठकों को चमत्कृत कर देती है और रोचकता के साथ जीवन की चरम अनुभूति देती है। कहानी में एक ही मूल भाव होता है; जो उसको लक्ष्य की ओर ले जाता है। कहानी को अँग्रेजी में 'शॉर्ट स्टोरी', संस्कृत में 'कथा' और बंगला में 'गल्प' कहते हैं। दरअसल यह मनुष्य की सामाजिकता की रचनात्मक भावाभिव्यक्ति है। यह एक ऐसी रचना है; जो मानव जीवन के किसी एक अंग को कहानीकार अपने मनोभावों से प्रदर्शित करता है। मुंशी प्रेमचंद के अनुसार- सबसे उत्तम कहानी वह होती है; जो किसी मनोवैज्ञानिक सत्य पर आधारित हो। कहानी लेखन में कई बिंदुओं का खयाल रखना पड़ता है। जैसे- संवेदना की खोज और उसकी प्रामाणिकता,

Scanned by CamScanner

जिज्ञासा, रोचकता, प्रतीक, संकेत, आकार, प्रस्तुति, शीर्षक, आरंभ और अंत, प्रभावान्विति आदि बिंदु कहानी लेखन के लिए मार्गदर्शक हो सकते हैं। कहानी लेखन की प्रकिया में नया लेखक किसी एक संवेदना पर चिंतन कर विषय को सोचे-समझे। जब विषय का हर पहलू या पक्ष मानव के मन-मस्तिष्क में तैयार हो तो एक ही बैठक में उसे शब्दबद्ध करें, ताकि उसकी संवेदना क्षीण न हो सके। कहानी का वर्ण्य विषय जीवन या जगत् की कोई घटना, प्रसंग, विचार या भावना हो सकती है। इस संवेदना में एकता होनी चाहिए, जो कहानी का प्राणतत्त्व है; क्योंकि संवेदनात्मक एकता से कहानी में प्रभावात्मकता आ जाएगी। कहानी में संवेदना का प्रबल आवेग जितना तीव्र होगा उतनी ही कहानी अच्छी होगी। कहानी में केवल कोरी कल्पना नहीं होती, बल्कि वह जीवन का व्यापक सत्य से अनुप्रणित करने वाली होती है। सत्य के कारण ही कहानी में जान आती है, जो पाठकों को प्रभावित करती है। श्यामसुंदर दास के अनुसार-आख्यायिका (कहानी) एक निश्चित लक्ष्य या प्रभाव को लेकर लिखा हुआ नाटकीय आख्यान है। मनोवैज्ञानिकता कहानी की प्रमुख विशेषता है। चरित्र और कथानक में स्वाभाविकता होनी चाहिए। मनोविज्ञान से ही कहानी पाठकों के दिलो-दिमाग पर छा जाती है। कहानी में क्रमबद्धता के साथ गतिशीलता होनी चाहिए। इसमें विश्रृंखलता को कोई स्थान नहीं है। भावपूर्ण संक्षिप्त संवाद कहानी को गति दे सकते हैं। कहानी की लघुता एवं भावों की तीव्रता पाठकों के मन को झकझोर देती है। गुलाब राय के मतानुसार- छोटी कहानी एक स्वत:पूर्ण रचना है। कहानी में संक्षिप्तता और औत्सुक्यपूर्ण वर्णन होता है। कहानी में घटनाओं के अलावा परिस्थिति का चित्रण अधिक होता है। कहानी का कथानक आरंभ से संघर्षपूर्ण होता है; जो चरमसीमा पर अंत पाता है। उसमें विस्तार और विषयांतर की कोई गुंजाईश नहीं है। जब द्वंद्वं की स्थिति से कहानी चरमसीमा की ओर अग्रसर होती है, तब जीवन की अत्यंत प्रभावकारी झलक दिखाई देती है। वस्तुत: कहानी जीवन के एक मार्मिक पक्ष की कलात्मक अभिव्यक्ति है। कहानी लेखन में कथावस्तु, पात्र या चरित्र-चित्रण, संवाद, देशकाल वातावरण, भाषा शैली और उद्देश्य ये तत्त्व महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। कहानी केवल परंपरा का विरोध नहीं करती, बल्कि अपना रूप, शैली और नए विषयों की खोज करती है। उसमें अनुभव की प्रामाणिकता पर विशेष ज़ोर दिया गया है।

सार यह कि कहानी जीवन के प्रभावपूर्ण अंश, मनोभाव या तीव्र संवेदन के कथात्मक रूप की कलात्मक अभिव्यक्ति है। कहानी आकार से लघु होती है और जीवन के किसी एक प्रसंग की मार्मिक व्याख्या करती है। ऐसी कहानी में कल्पना, नाटकीयता, मनोवैज्ञानिकता, सक्रियता, प्रभान्विति, स्वाभाविकता, सरलता, स्पष्टता आदि गुण विद्यमान होते हैं। कहानी एक ऐसी विधा है; जो जीवन के किसी एक अंग या मनोभाव का मनोहारी चित्रण करती है।

Scanned by CamScanner

2.3.1.4 कहानी लेखन का महत्त्व तथा उपयोगिता :

कहानी लेखन केवल मनोरंजन के लिए नहीं किया जाता है, बल्कि मानवी मन का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने, मानसिक गुत्थियों को सुलझाने, जीवन के सत्यों का मार्मिक उद्‌घाटन करने, चरित्रों पर प्रकाश डालने, मानव जीवन की समस्याओं पर प्रकाश डालने और सत्य, शिव और सुंदरता का विधान करने के लिए लिखी जाती है। दरअसल प्रकृति और चरित्र, मानव-मानव के शाश्वत संबंध, मानवी मूल्य, भावों, विचारों तथा अनुभूतियों के विभिन्न रूपों से व्याख्या करने की दृष्टि से कहानी का साहित्य में महत्त्व है। जब कहानी सच्चाई बयां करती है, अमूर्त संवेदनाओं को मूर्त रूप देती है, तब उसकी उपादेयता बढ़ जाती है। वह व्यष्टि-समष्टि दोनों पर प्रभाव छोड़ती है। कहानी परिस्थिति की घनिष्ठता से जुड़ी होती है अर्थात् कहानी में एकता और अन्विति होती है। इसमें कहानीकार घटनाओं की श्रृंखला का खयाल रखता है और पात्रों की प्रत्येक मनोदशा का रेखांकन करता है। वैसे देखा जाए तो कहानियों के विषय का ताना-बाना वास्तविकता के धरातल पर बुना गया हो तो वे कहानियाँ महत्त्वपूर्ण और जीवनोपयोगी बन जाती है। कहानियों में चित्रित वर्णन यदि सच्चाई के करीब होता है तो सारी घटनाएँ आँखों के सामने ओझल हो जाती है। इसलिए कहानी का वर्ण्य विषय वर्तमान से ताल्लुक रखने वाला होता है तो पाठकों को वह विषय अपना विषय लगता है। ऐसे विषय वर्तमान समाज में जूझ रहे पात्रों की समस्या हल कर देते हैं। तब कहानी कहानी न रहकर जीवन का सार बन जाती है। मानव जीवन के दो पहलू हैं- सुख और दुःख। कोई दुःख में सुख की अनुभूति करें तो उसका जीवन सफल हो जाता है। वह किसी भी दुःख में हार नहीं सकता, बल्कि अपराजित होकर दुनिया को कूच कर देता है। कहानी मानव जीवन की जटिलता एवं विवशता प्रस्तुत कर देती है। कहानी में चित्रित पात्र जिस प्रकार समस्याओं का सामना करते हैं, उसी प्रकार पाठक भी अपनी समस्याओं का हल निकालते हैं। दरअसल कहानी जीवन के ऐसे विचार बिंदुओं का रेखांकन करती हैं; जिससे मानव जीवन की रेखा प्रकाशित हो उठती है।

सार यह कि कहानी मानसिक रहस्य को खोलती है, जीवन के मार्मिक पक्षों का उद्‌घाटन करती है, जीवन के सत्यों को खोल देती है, मानव चरित्रों का उद्‌घाटन करती है, जीवन की विभिन्न समस्याओं को उठाती है और उसका समाधान भी प्रस्तुत करती है। इन सभी तथ्यों की दृष्टि से कहानी का साहित्यिक महत्त्व तथा उपयोगिता अनिवार्य रूप में स्वीकार करना पडता है।

2.3.1.5 यात्रा वृत्तांत लेखन का स्वरूप :

यात्रा बृत्तांत आधुनिक साहित्य की देन है। यात्रा वृत्तांत एक ऐसी विधा है; जो प्रकृतिपरक है। यात्रा साहित्य का बुनियादी ढाँचा प्रकृति-चित्रण पर खड़ा है। जीवनी विधा की तरह यात्रा वृत्तांत

Scanned by CamScanner

में दूसरों के जीवन के कुछ क्षणों का वर्णन किया जाता है; प्रकृति का चित्रण होता है; जिसमें कभी कभार कथा तत्त्व गायब होता है। साहित्य का मूल आधार ही मनुष्य जीवन है। लेखक किसी-न-किसी रूप में वह अपना जीवन कम-अधिक मात्रा में साहित्य की विभिन्न विधाओं के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। इन विधाओं के विभाजन में प्रवृत्ति प्रभावशाली है। यही वजह है कि यात्रा वृत्तांत प्रकृति-चित्रण के साथ-साथ जीवनांशों, भावनाओं, कथा तत्त्वों तथा वैचारिकता को भी समेट लेता है।

यात्रा साहित्य एक विशिष्ट विधा है। एक स्थान से दूसरे स्थान तक गमना-गमन की क्रिया यात्रा कहलाती है। यात्रा शब्द की व्युत्पत्ति 'या+ष्ट्रन' शब्द से हो चुकी है। यात्रा का अर्थ है- सफर। यात्रा का सीधा अर्थ एक स्थान से दूसरे स्थान चले जाना अर्थात् निरंतर स्थान परिवर्तन या संचारशीलता को यात्रा कहा जाता है। यात्रा वृत्त का अर्थ है यात्रा का वृत्तांत। वृत्तांत का अर्थ है जो घटित हुआ हो। यात्रा वृत्तांत में वृत्तांत का अर्थ है वृत्त का अंत और यात्रा के अंत के बाद इतिवृत्त प्रस्तुत करना ही यात्रा वृत्तांत है। देश-विदेश में घटित घटना, देखे दृश्य, प्राप्त अनुभूतियों का वृत्तांत लिखना ही यात्रा वृत्तांत है। इसमें कल्पना के बजाय यथार्थ को स्थान दिया जाता है। यहाँ पात्रों की सृष्टि बहुत कम दिखाई देती है; जबकि प्रकृति ही पात्र बनकर उभरती है। पं. उमेश शास्त्री ने यात्रा वृत्तांत के कलात्मक और रूपात्मक दोनों अंगों का विचार करते हुए यथार्थ पर जोर दिया है। महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने अपनी पुस्तक 'घुमक्कड शास्त्र' में लिखा है-'घुमक्कडी एक रस है, जो काव्य रस की तरह भी कम नहीं है। कठिन मार्गों को तय करने के बाद नए स्थानों पर पहुँचकर हृदय में जो भावोद्रेक पैदा होता है, वह एक अनुपम चीज है। उसकी कविता के रस से हम तुलना कर सकते हैं और यदि कोई ब्रह्म परक विश्वास रखना हो तो वह उसे ब्रह्म समझेगा।' महापंडित यात्रा वृत्तांत की तुलना ब्रह्मानंद से करते हैं। इसमें केवल भावों को महत्त्व दिया गया है। यात्रा वृत्तांत लेखन में आत्मीयता, कल्पना-प्रवणता, भाव-प्रवणता, चित्रात्मकता, रोचकता, संचरणशीलता, वस्तुनिष्ठता, तथ्यात्मक दृश्यांकन, विवरणात्मकता, संवेदनशीलता आदि तत्त्वों का होना जरूरी है। साथ में यात्रा साहित्य में यात्रियों की आंतरिक प्रेरणा और बाह्य परिवेश का अंकन जरूरी होता है। पहले जीतने की इच्छा से युद्ध करने के लिए राजा अपने सैन्य के साथ गमन या प्रस्थान करता था, उसे यात्रा कहा जाता था।

यात्रा साहित्य में चित्रित देश-विदेश का बदलता परिवेश, प्रकृतिगत परिवर्तित रूपों का दर्शन मानवी मन को सुखद एवं आनंद का आस्वाद देता है। मनुष्य प्रकृति प्रेमी एवं सौंदर्य प्रेमी है। सौंदर्यबोध की तलाश में मनुष्य उत्साह भाव से प्रेरित होकर जब यात्रा करता है तब उसका मुक्त भाव रेखांकित होता है; उसे यात्रा साहित्य या यात्रा वृत्तांत कहा जाता है। यात्रा वृत्तांतकार यायावरी

Scanned by CamScanner

या घुमक्कड मनोवृत्ति के होते हैं, वे जहाँ भी यात्रा करने जाते हैं; वहाँ से साहित्य की भांति कुछ-न-कुछ ग्रहण करते हैं। यात्रा स्थानों से ग्रहण किए गए प्रेम, सौंदर्य, भाषा, यादें और जीवन के खट्टे-मीठे अनुभव वे अपनी रचना में साझा करते हैं; जो यात्रा साहित्य नाम से जाने जाते हैं। सचमुच मानव अनादि काल से यात्रा करता आ रहा है। साहित्य के क्षेत्र में घुमक्कड अनुभवों को साझा करना अभिव्यक्ति का एक नया रूप हैं; जिसे यात्रा वृत्तांत कहा जाता है। आदिकाल में यात्रा का महत्त्व था, आज भी है और भविष्य में बरकरार रहेगा। आदिकाल में इस विधा का स्वरूप अलग था। तब लेखक देश-विदेश में घूम कर लोगों को वाणी के माध्यम से अपने अनुभवों को बताया करता था। सचमुच यात्रा साहित्य का आरंभ भारतेंदु युग से ही माना जाता है। यात्रा वृत्तांत में लेखक हर स्थल और क्षेत्रों में से अद्‌भुत सत्य को ग्रहण करता है और बाहरी जगत् की प्रतिक्रियास्वरूप जो भावनाएँ उसके दिल में उमड़ती है; उसी को पूरी क्षमता या चेतना के साथ रेखांकित करता है। लेखक की खूबी से ही शुष्क या निरस वर्णन भी मधुर एवं भावविभोर करने वाला बन जाता है। पाठक उस यात्रा साहित्य से इतना समरस होता है कि वह यात्रा करने के लिए लालायित हो उठता है। यात्रा लेखक को अधिक संवेदनशील न होकर निरपेक्ष होना चाहिए; ताकि यात्रा साहित्य यात्रा साहित्य बन जाए न कि आत्म चरित्र या आत्म स्मरण। यात्रा साहित्य में यात्रा स्थानों के प्राकृतिक सौंदर्य के साथ-साथ दर्शनीय स्थलों का विवरण प्रधानता से किया जाता है। परिवेश का निरीक्षण एवं प्रस्तुतिकरण इस विधा का केंद्रीय कथ्य होता है। यात्रा साहित्य में परखता, स्वच्छंदता, आत्मीयता आदि गुणों का होना जरूरी है। यात्रा साहित्य में विविध शैलियाँ विभिन्न रूपों में पिरोई जाती है। इनमें निबंधात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, डायरी शैली काफी चर्चित शैलियाँ हैं, जो यात्रा साहित्य को जीवंतता प्रदान करती है। संक्षेप में, यात्रा के दौरान आए अनुभवों को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करना ही यात्रा वृत्तांत है।

2.3.1.6 यात्रा वृत्तांत लेखन का महत्त्व तथा उपयोगिता :

यात्रा वृत्तांत का महत्त्व बहुआयामी है। यात्रा वृत्तांत में पाठक अपने रमणीय अनुभवों, यात्रा स्थानों का हू-ब-हू वर्णन पाठकों तक पहुँचा देता है; जिसके माध्यम से पाठक उन स्थानों का अनुभव कर लेते हैं। इतना ही नहीं, पाठक लेखक द्‌वारा प्रस्तुत अनुभवों का लाभ उठाता है। यात्रा वृत्तांतकार उस समाज या स्थानों की संस्कृति के विभिन्न आयामों को अपने यात्रा वृत्तांत में प्रस्तुत करता है; जिससे लोग एक-दूसरे की संस्कृति से परिचित हो जाते हैं। प्रारंभिक काल में यात्रा शिक्षा और धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु हुआ करती थी। इसी दौरान आए अनुभवों को लेखक अपनी किताब में प्रस्तुति देता था; जिसका लाभ पाठक वर्ग उठाता था। यात्रा वृत्तांतकार जिन स्थानों की यात्रा

Scanned by CamScanner

करता है, वहाँ का तटस्थ दृष्टा के रूप में निरीक्षण-परीक्षण करता है और लिख देता है; जिसमें प्रकृतिगत और स्थानगत विशेषताएँ प्रतिबिंबित हो उठती है। दरअसल यात्रा साहित्य देश-विदेश की व्यापक जीवन पद्धति को उभारने का कार्य करता है। यात्रा वर्णन से मानव जीवन चेतनामयी एवं आनंददायी बन जाता है। एक जगह से दूसरी जगह यात्रा करना गतिशीलता के साथ-साथ प्रगतिशीलता का लक्षण माना जाता है। नि:संदेह यात्रा के अनुभवों का बारीकी से अंकन करना और पाठक को प्रत्यक्ष उस माहौल का एहसास दिलाने की दृष्टि से यात्रा साहित्य का महत्त्व और उपयोगिता है। यात्राकार को अपना नाम रोशन करने के लिए भी यात्रा साहित्य का महत्त्व होता है। मनुष्य का विकास यात्रा से संबंधित दिखाई देता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि यदि प्रभु राम, श्रीकृष्ण, वास्को-दी-गामा, सिकंदर, विवेकानंद अपने जीवन में यात्रा नहीं करते, तो उनका नाम दुनियाभर में रोशन नहीं हो पाता। साहित्य की बात करें, तो राहुल सांस्कृत्यायन से निर्मल वर्मा तक का समग्र यात्रा साहित्य इसी बात की प्रतीति देता है। आदिकाल के वीरग्रंथों में युद्ध का आँखों देखा वर्णन अन्यत्र दुर्लभ है। इसका मुख्य कारण यह है कि तत्कालीन कवि राजा के साथ युद्ध के स्थान पर जाया करते थे और समय आने पर लड़ते भी थे। यात्रा साहित्य से विभिन्न यात्रा स्थानों का ज्ञान घर बैठे मिल सकता है। देश-विदेश में मानवता और नैतिक मूल्यों के मापदंड अलग-अलग होते हैं; जिसका परिचय यात्रा साहित्य से हो जाता है। जैसे भारतीय संस्कृति में विवाह बाह्य संबंध, कुमारी माता, विधवा का संतान को जन्म देना आदि अनैतिक माना जाता है, मगर विदेश में ये सब नैतिक माना जाता है। यात्रा साहित्य से देश-विदेश के लोगों की सभ्यता, प्रकृति, संस्कृति और जीवन दृष्टि का परिचय हो जाता है। मानव जीवन की प्रेरणाओं को जानने-पहचाने और उनकी आस्था-अनास्था, विश्वास-अविश्वास का ज्ञानार्जन यात्रा साहित्य से मिल जाता है। रंगमयी एवं गंधमयी प्रकृति की अनेक छटाएँ यात्रा से ही अनुभव की जा सकती है। मनुष्य अनेक अनुभूतियों का गहरा ज्ञान आखिरकार प्रकृति से हासिल करता है। दो संस्कृति, समाज, परिवेश, भाषा का तुलनात्मक अध्ययन करने की दृष्टि से यात्रा साहित्य का महत्त्व तथा उपयोगिता है। यात्रा साहित्य का महत्त्व अंकित करते हुए डॉ. हरिमोहन अपनी किताब 'साहित्यिक विधाएँ : पुनर्विचार' में लिखते हैं-'जो लोग घूम-फिरकर दूसरे देशों की वेशभूषा, रहन-सहन और बोली का अध्ययन नहीं करते, वे बिना सींग के बैल के समान हैं। जब आदमी समुद्र से घिरी पृथ्वी का भ्रमण करता है, तब वह सज्जनों के आचरण, दुर्जनों की चेष्टा, विविध प्रकार के लोगों की उत्कंठा, विदग्ध जनों के परिहास, गंभीर और गूढ़ शास्त्रों के तत्त्व से परिचित होता है। यात्रा से मानव बुद्धि का विकास होता है। घुमक्कड व्यक्ति समाज के लिए हितकर होता है; क्योंकि दुनिया भर के अनुभव, शिक्षा और ज्ञान घुमक्कड व्यक्ति को ही मिल जाता है। उसका अनुभव संसार समृद्ध एवं संपन्न हो जाता है। यात्रा के बाद अपने समृद्ध अनुभव लेखन के माध्यम से शब्दबद्ध कर लेखक दूसरों को बाँटता है, दूसरों

Scanned by CamScanner

की जिज्ञासा एवं कौतुहल को संतुष्ट कर देता है। जब ये अनुभव यात्रा वृत्तांत के रूप में आकार लेते हैं, तब वे दूसरे यात्री के लिए दिशादर्शक बन जाते हैं।

यात्रा के कारण मनुष्य का व्यक्तित्व बहुआयामी बन जाता है। अनेक अनुभूतियों से उसका ज्ञान अधिक गहरा हो जाता है। यायावरी वृत्ति से मुनष्य में उल्लास, उमंग, उत्साह एवं आनंद की भावना प्रस्फुटित हुई। लेखक यात्रा के दौरान आए अनोखे अनुभवों को पाठकों के साथ साझा करता है। यात्रा लेखन के दौरान यात्राकार उन्हीं अनुभवों को पुन: भोगता है और उनका आनंद भी उठाता है, जबकि प्रत्यक्ष रूप में कष्टप्रद और पीड़ादायक रहे होते हैं। इसमें उसका मनोरंजन भी होता है। यात्रा साहित्य से लेखक और पाठक के बीच तादात्म्य स्थापित होता है, उनमें एकात्मकता का भाव जागृत हो उठता है। यात्रा का सबसे अहम उपयोग यह है कि मनुष्य यात्रा के दौरान प्रकृति से विशालता और उदारता ग्रहण करता है और अपने जीवन जीने का संकीर्ण दायरा छोड़कर आजाद पंछी की तरह मुक्ति का आनंद लेता है। अत: यात्रा मानव जीवन का अहम हिस्सा है।

अनादि काल से चला आया यात्रा का सिलसिला कभी जीविकोपार्जन के लिए रहा, तो कभी नए तथ्यों की खोज के लिए रहा। लेकिन एक बात आवश्य कही जा सकती है कि यात्रा साहित्य मनुष्य की मानवता को फलने-फुलने का अवसर जरूर देती है। धर्म एवं संस्कृति के प्रचार प्रसारक, ऋषि-मुनि, साधु-संत तथा आचार्यों ने भी यात्राएँ की और वे संस्कृति के संवाहक रहें। आखिरकार यात्रा-साहित्य से पाठक एक-दूसरे की संस्कृति से परिचित हो जाते हैं। इतना ही नहीं, वे प्रकृति का मनोहारी चित्रण पढ़कर चेतनामयी एवं आनंददायी बन जाते हैं।

2.3.2 कविता, कहानी तथा यात्रा वृत्तांत के क्षेत्र-सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक :-

2.3.2.1 कविता का सामाजिक क्षेत्र :

जब कविता शब्दाकार लेती है तब वह अनायास ही समाज का, समाज की राजनीति का और संस्कृति का हिस्सा बन जाती है अर्थात् कविता कौन-कौन से क्षेत्र में प्रवेश करती है यानी कविता किस प्रांगण में प्रवेश करती हैं; इसमें सामाजिक क्षेत्र मुख्य है; जिसका विवेचन-विश्लेषण कई रूप में दृष्टव्य है। जैसे- चंद्रमा के बिना शीतल प्रकाश की कल्पना नहीं की जा सकती, वैसे समाज के बिना जीवनव्यापी काव्य की कल्पना नहीं की जा सकती। चंद्रमा का अस्तित्व उसकी शीतलता है और समाज का अस्तित्व साहित्य है। साहित्य से ही समाज सत्यम्, शिवम् और सुंदरम् की कामना करता है। काव्य एक श्रेष्ठ कला है। यदि इस काव्य कला से मनुष्य जीवन से निकाल दिया तो

Scanned by CamScanner

मानव जीवन निरस, ऊबाऊ बन जाएगा। उसे सत्य, शिव और सुंदरम की प्रतीति नहीं होगी। इससे मनुष्य अमानवीय एवं असंस्कृत बन जाएगा। काव्य मनुष्य का जीवन असंस्कृति से संस्कृत, अमानवीयता से मानवीय, असुंदरता से सुंदर, कुसंस्कार से सुसंस्कारी बना देता है। आखिरकार मानव जीवन का हित सुंदरता में ही है और सुंदर ही मंगल है। सत्य के लिए मानव अपनी आत्मा का विस्तार कर देता है। सत्य, शिव और सुंदर मानव की आत्मा के विस्तार के आधार पर ही सुसंस्कारी समाज बन जाएगा। मनुष्य अपने साथ दूसरों का भी विचार करता है। उससे समाज का गठन होता है। काव्य का सृजन करने वाला कवि जिस प्रकार सौंदर्य, शिव और सत्य को चाहने वाला स्वभाव कारण बन जाता है, उसी प्रकार उसकी समाज जीवन की अनुभूति भी कारण बन जाती है। समाज काव्य-निर्मिति का प्रेरक कारण बन जाता है। साहित्य ही समाज को सत्य, शिव और सुंदरता से युक्त सुसंस्कृत बनने की प्रेरणा देता है। प्रेरणा की दृष्टि से या प्रबल आवेग पैदा करने की दृष्टि से समाज और काव्य अर्थात् साहित्य का अन्योन्याश्रित संबंध है। कोई भी कवि अपने सामाजिक दायित्व से मुँह मोड़ नहीं सकता। इसलिए समाज के अच्छे और बुरे पहलू; जो कवि ने अनुभव किए हैं, वही कविता का विषय बन जाते हैं। जब तक कविता का सामाजीकरण और साधारणीकरण नहीं होता, तब तक कविता का मूल उद्देश्य सफल नहीं होता है। इसलिए कविता का प्रधान लक्ष्य व्यक्ति की अनुभूतियों, मान्यताओं या कल्पनाओं का सामाजीकरण या साधारणीकरण करना होता है। जहाँ कविता में कवि की निजता की अनुभूतियाँ सामाजीकरण में बाधक सिद्ध होगी, वहाँ वह गुण के बजाय दोष बन जाता है। कवि को अपनी वैयक्तिकता को सामाजिक रूप देकर ही अभिव्यक्त करना पड़ता है। तभी काव्य के माध्यम से सामान्य बात असामान्य बन जाती हैं। सामान्य व्यक्ति और साहित्यकार में यही अंतर है कि सामान्य व्यक्ति अपनी निजता को सामाजिक रूप नहीं दे पाता, मगर साहित्यकार या कवि अपनी निजता का सामाजीकरण करता है, साधारणीकरण करता है। भारतीय एवं पाश्चात्य आचार्यों ने काव्य के साधारणीकरण, सामाजीकरण या निर्वैयक्तिकरण पर जोर दिया है। दरअसल कवि अपनी निजी बात को सामाजीकरण की प्रक्रिया के द्वारा निर्वैयक्तिकता में परिवर्तित कर देता है। इसलिए कवि की वेदना, पुकार, शोक केवल उसका अपना नहीं रह जाता; वह समग्र समाज का करुण शोक बन जाता है। सार यह कि निजता काव्य का आधार है, तो निर्वैयक्तिकरण उसका लक्ष्य है। वैयक्तिकता या निजता ही निर्वैयक्तिकता में परिणत करना ही काव्य है। ऐसी कला सबको मोहित कर देती है और सबको लुभाती भी है। तब कवि की वैयक्तिक अनुभूति, सामाजिक अनुभूति का रूप धारण कर लेती है। ऐसा काव्य सामान्य से असामान्य और साधारण से असाधारण बन जाता है। कविता के माध्यम से ही समाज में विद्यमान सुख-दुःख, आनंद-क्लेश, क्रोध-करुणा अच्छी तरह से अभिव्यक्त हो जाती हैं; जिससे पाठक समरस हो जाता है। तभी कवि हृदय और पाठक हृदय की भावना का साधारणीकरण हो जाता है।

Scanned by CamScanner

2.3.2.2 कविता का राजनीतिक क्षेत्र :

राजनीति कविता का अनिवार्य अंग है। काव्य के समस्त बौद्धिक तत्त्व रचयिता के बौद्धिक पक्ष की अभिव्यक्ति का सूचक है। कवि राजनीतिक विचारधारा का समर्थन करता है या किसी विचारधारा का खंडन-मंडन भी करता है। यह बात कवि के ज्ञान, अनुभव एवं चिंतन पर निर्भर करती है। कवि चाहे किसी भी चरित्र को भावनाओं एवं अनुभूतियों से चित्रित करें, लेकिन उसमें उसके निजी व्यक्तित्व की झलक विद्यमान रहती है। कवि के मन-मस्तिष्क पर राजनीतिक चिंतन की गहरी छाप हो तो वह अपनी कविता में राजनीतिक विचारों की पहल करता है। ऐसी पहल के माध्यम से कवि का राजनीतिक दृष्टिकोण अभिव्यक्त होता है; जो तत्कालीन समाज में राजनीतिक विचारधारा को पिरोने का कार्य करता है। ऐसे विचार ही समाज में राजनीतिक तख्त को पलट देते हैं, सत्ता को उथल-पुथल कर देते हैं। राजनीतिक व्यक्ति पर ही कविता का महत्त्व या प्रचार-प्रसार निर्भर करता है। हमारा इतिहास इस बात का गवाह है कि अनेक राजा-महाराजाओं द्वारा साहित्य को अपने जीवन का अभिन्न अंग माना। इतना ही नहीं, अनेक राजाओं के राज्य में आश्रयदाता कवि भी हुआ करते थे। यही कवि राजा के मन-मस्तिष्क को स्वस्थ बनाने का कार्य करते थे, राजा को कर्तव्य के प्रति सजग करते थे। शुरुआत में लोग रामराज्य का सपना लेकर राजनीति में आते थे, लेकिन आज स्वार्थसिद्धि हेतु राजनीति में आने लगे हैं। राजनीति में सत्ता-लिप्सा का खेल खेला जाता है, अधिकारों का गलत इस्तेमाल किया जाता है, नीति-अनीति, सही-गलत, अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म आदि सभी के परे जाकर सत्ता हाथियाने का षड्यंत्र किया जाता है। राजनीति में आ रही यह अनैतिक प्रवृत्ति आधुनिक विकृति की देन है; जिसने भारतीय प्रजातंत्र पर ही सवाल खड़ा किया है। ऐसी स्थिति में कवि हृदय राजनीतिक षड्यंत्र, दलबदलू वृत्ति, सत्ता-प्राप्ति की होड़, जाति-बिरादरी की राजनीति जैसे अनैतिक प्रवृत्तियों को देखकर आंदोलित हो उठता है। कवि हर हालत में अपनी कविता के माध्यम से राजनीतिक मूल्य बचाए रखने और उसका प्रचार-प्रसार करने का कार्य करता है। राष्ट्र के विकास में राजनीति साधक बनने के बाजय बाधक बन जाती है, तो अनेक मुसीबतें उस राष्ट्र के सामने खड़ी होती है।

अरस्तू के अनुसार मनुष्य एक राजनीतिक प्राणी है और हम जिस युग में रह रहे हैं वह राजनीतिक युग है। राजनीति की व्याप्ति का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि विज्ञान, साहित्य, धर्म, उद्योग, नीति, कूटनीति आदि क्षेत्रों तथा व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्वजनीन संबंधों में राजनीति की पेर हो गई है। राजनीति की इसी पेर से हमारा साहित्य भी अछूता नहीं रहा है। कविता व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र या विश्वजनीन राजनीतिक संबंधों को दृढ़ करती है। राजनीतिक दाँवपेच, सत्ता एवं धन की लालसा में सही और गलत की समस्त सीमाओं को

Scanned by CamScanner

लाँघकर उसका सारा खेल स्वार्थकेंद्रित दिखाई देने लगा है। कविता इसी खेल को मानव मस्तिष्क से दूर कर देती है और आदर्श राजनीतिक मूल्यों की स्थापना कर देती है। यही मूल्य समाज और राजनेता की मानसिकता को स्वस्थ बना देते हैं। आधुनिक काल के कवि बाबा नार्गाजुन इसका सशक्त उदाहरण है। उन्होंने जनविरोधी बातों का खुलेआम विरोध किया। उनकी कविता शोषित, पीड़ित जनता की आवाज थी। यही वजह है कि उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। उन्हें जो बात अच्छी लगती वे उसी राजनेता के साथ खड़े होते थे, लेकिन जहाँ जनविरोधी बात आती है, वहाँ वे उसका भारी विरोध करते थे।

2.3.2.3 कविता का सांस्कृतिक क्षेत्र :

वस्तुत: संस्कृति एक जीवन की विधि है और एक जीवन जीने की पद्धति भी। हम खाना खाते हैं, कपड़े पहनते हैं, भगवान की पूजा-अर्चना करते हैं, उत्सव-पर्व-त्योहार मनाते हैं, भाषा बोलते हैं, ये सारे संस्कृति के अंग है। संस्कृति उस विधि का नाम है; जिसके आधार पर हम सोचते हैं और कार्य करते हैं। कवि के सोच-विचार और कर्म पर संस्कृति का गहरा प्रभाव रहता है। यही प्रभाव या भावनाओं का प्रबल आवेग कविता के माध्यम से अभिव्यक्ति पाता है। किसी भी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों का दूसरा नाम संस्कृति है। वस्तुत: सत्य, शिव और सुंदर ये शाश्वत मूल्य कविता में संस्कृति के कारण ही आ जाते हैं। कविता इन्हीं मूल्यों का जतन करती है और प्रचार-प्रसार भी। काव्य कला मानव जीवन को सौंदर्य प्रदान करती है और सौंदर्यनुभूतिपरक मानव बना देती है, लेकिन सौंदर्य भी आखिरकार संस्कृति का ही हिस्सा है। कविता के सांस्कृतिक मूल्य मानव को नीतिवान बना देते हैं और दूसरे मानव के संपर्क में ला देते हैं और कविता, प्रेम, सहिष्णुता एवं शांति का पाठ पढ़ा देती है। मानव का जीने का एक ही तरीका है और वह है सत्य का मार्ग। संस्कृति वह गुण है; जो मनुष्य को मनुष्य बना देती है और कविता उसी मानवता की हिमायत करती है। काव्य का सांस्कृतिक पक्ष मनुष्य को जीवन जीने का अर्थ और जीवन जीने का तरीका सीखाता है। सामाजिक सदस्य के रूप में मनुष्य की सभी उपलब्धियाँ उसकी संस्कृति से अनुप्रणित होती है। कला, साहित्य, संगीत, वास्तु विज्ञान, शिल्प, कला, धर्म, दर्शन, विज्ञान आदि सांस्कृतिक प्रस्तुतिकरण के विभिन्न पहलू हैं। काव्य इसी सांस्कृतिक प्रस्तुतिकरण का नाम है। मनुष्य सिर्फ भोजन से नहीं जीता, बल्कि उसके लिए मन-मस्तिष्क या आत्मा की संतुष्टि भी जरूरी है। भौतिक उन्नति से शारीरिक भूख मिट सकती है, मगर मन और आत्मा भूखे ही रह जाते हैं। उसे संतृष्ट करने के लिए मनुष्य जो उन्नति करता है उसे संस्कृति कहा जाता है। मन और आत्मा की उन्नति का प्रबल आवेग काव्य के संस्कृतिक क्षेत्र में झलक उठता है। व्यक्ति की जिज्ञासा का परिणाम धर्म और दर्शन है। सौंदर्य की खोज में मनुष्य संगीत, मूर्ति, चित्र, साहित्य और वास्तु आदि कलाओं को उन्नत बना

Scanned by CamScanner

देता है। इन्हीं कलाओं का सम्यक् दर्शन कविता के सांस्कृतिक पक्ष के अंतर्गत होता है। कवि की बाह्य और आंतरिक अनुभूति से प्राप्त व्यवहारों के तरीके संस्कृति से अंग बन जाते हैं। काव्य में अभिव्यक्त संस्कृति का मूल केंद्रबिंदु उन सूक्ष्म विचारों में समाहित है, जो एक समूह में ऐतिहासिक रूप से उनसे संबंद्ध मूल्योंसहित विवेचित होते रहते हैं। काव्य में वर्णित संस्कृति किसी समाज का वह सूक्ष्म संस्कार होती है; जिनके माध्यम से लोग परस्पर-संप्रेषण, विंचार-विनयम, जीवनविषयक अभिवृत्तियों और ज्ञान को दिशा देते हैं। संस्कृति हमारे जीने और सोचने की विधि है। यही विधि काव्य में परिलक्षित होती रहती है। कविता में धार्मिक क्रिया-कलाप, मनोरंजन के साथ-साथ आनंद के तौर-तरीके भी शामिल होते हैं। काव्य में समाहित सांस्कृतिक क्षेत्र के दो पहलू हैं; इसमें पहला हमारी वेशभूषा, रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज आदि से संबंध रखता है, तो दूसरा पक्ष विचारों, आदर्शों, भावनाओं और विश्वासों से संबंध रखता है। संस्कृति की व्याख्या हर समाज या राष्ट्र की दृष्टि से अलग-अलग होती है। दरअसल किसी भी राष्ट्र की सही पहचान वहाँ के लोगों की सांस्कृतिक परंपराओं और विशेषताओं से ही होती है। व्यक्ति को संस्कारित एवं परिष्कृत करना ही संस्कृति है। कविता में निहित यही संस्कृति व्यक्ति को सुसंस्कारित करती है। व्यक्ति के विभिन्न क्रिया-कलाप उस राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान कराते हैं। संस्कृति में व्यक्ति का रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज, वेशभूषा, उत्सव, पर्व, त्योहार आदि कथा-व्यथा रेखांकित रहती है। कविता तत्कालीन देशकाल की संस्कृति की परिचायक होती है। संस्कृति में हर समाज की जीवन पद्धति, रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार, नया आविष्कार शामिल है, जिससे मनुष्य अमानवीय से मानवीय बन जाता है; असभ्य से सभ्य बन जाता है। यही सांस्कृतिक विचार कविता प्रचारित एवं प्रसारित करती रहती है।

2.3.2.4 कहानी का सामाजिक क्षेत्र :

कहानी विधा का ढांचा ही समाज, संस्कृति और राजनीति का नींव पर खड़ा होता है। कहानी में चित्रित समाज एक-दूसरे के प्रति स्नेह एवं सहृदयता का भाव रखता है, संस्कृति अपनी गौरवशाली परंपरा को रेखांकित करती है, तो राजनीति प्रजातंत्र को मजबूत करती है। सामाजिक क्षेत्र कहानी की बुनियाद है; जिसका चित्रण कई रूप में प्रस्तुत होता है। कहानी और समाज का घनिष्ठ संबंध है। कहानीकार समाज में जीता है और सामाजिक परिवेश से नए विषयों को ग्रहण कर स्वानुभूत अभिव्यक्ति देता है। परिणामतः समग्र समाज लाभान्वित होता है। कहानीकार अपनी कहानी के माध्यम से दुर्बल इकाइयों को लड़ने की प्रेरणा देता है। वह कहानी में व्यापक अनुभूति, गहरी संवेदना प्रतिबिंबित करता है। भारतीय समाजिक परिवेश में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। हमारी संयुक्त परिवार की परंपरा धीरे-धीरे एकल परिवार में तबदील हो गई। पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी

Scanned by CamScanner

में संबंधों और मूल्यों का बदलता रूप कहानियों में चित्रित हो रहा है। आज की युवा पीढ़ी पुराने मूल्यों को त्याग कर नए जीवनमूल्यों का सर्जन कर रही है। इसी वजह से परिवार समाज से धीरे-धीरे कटता जा रहा है। मानवीय मूल्यों को त्यागकर स्वार्थ, लोभ, ईर्ष्या, मोह, माया का वरण हो रहा है। वर्तमान कहानी के समाजिक, नैतिक मापदंडों एवं मूल्यों के बदलते स्वरूप में इसकी स्पष्ट झलक दिखाई देती है। इन्हीं मूल्यों को बचना सामाजिक कहानीकारों के सामने एक बहुत बड़ी चुनौती है। सामाजिक बंधनों और सामाजिक शिष्टाचार के नियमों का पालनं सामाजिक कहानी में होना चाहिए।

नए कहानीकारों ने एक ओर बदलते रिश्तों की कशमकश, अजनबीपन, उदासीनता, भय, बेगानापन, घुटन आदि सामाजिक समस्याओं को अपनी कहानी में सहारा दिया हैं, तो दूसरी ओर पुराने रिश्ते, प्राचीन परंपराओं, आदर्शों, नैतिक नीति-नियमों को तिलांजलि दी है। कहानीकार की भीतरी गहराई का दर्द स्वानुभूत होकर अभिव्यक्त होने लगा है। आज यह स्वानुभूति वैयक्तिकता छोड़कर प्रामाणिकता से निर्वैयक्तिक बन गई है।

कहानीकार समाज की संवेदना, परिवेश की वास्तविकता और टूटते-बिखरते संबंधों को बड़े सिद्दत के साथ व्यक्त कर रहे हैं। नए कहानीकारों ने समाज को नए दृष्टिकोण से देखा। पहले कहानी में कहानीकार व्यक्ति को समाज की दृष्टि से देखता था, वही आज की कहानी समूहगत सामाजिकता को व्यक्तिगत सामाजिकता के रूप में देखती है। शहरी समाज में इन्सान का व्यवहार आत्मकेंद्रित और यांत्रिक होता जा रहा है। अमानवीयता, संवेदनहीनता, नैतिक मूल्यों को तिलांजलि दी जा रही है, जिसका चित्रण वर्तमान कहानी पूरे सिद्दत के साथ कर रही है।

2.3.2.5 कहानी का राजनीतिक क्षेत्र :

हर देश की राजनीति और विकास का गहरा संबंध होता है। देश की राजनीति जितनी सकारात्मक और विवेकशील होती है, उतना ही देश का विकास अधिक होता है। जिस प्रकार भारतीय राजनीति ने अनेक करवटें ले ली, उसने अनेक पड़ावों को देखा, उसी प्रकार का वर्णन अनेक कहानीकारों ने अपनी कहानियों में किया। देश की राजनीति में अनेक क्रांतिकारी घटनाएँ हुई। कई महान राजनेताओं ने भारतीय राजनीति को नीतिमान बनाया और उसे जनसेवा का पर्याय बना दिया। परिणामस्वरूप राजनीति में उच्च मानवीय मूल्यों की स्थापना भी हुई। मानवतावाद, विश्वबंधुता, आध्यात्मवाद जैसे उच्च मानवीय मूल्यों से राजनीति के नए आयाम विकसित हुए। यही मूल्य तत्कालीन कहानी में दिखाई देते हैं। स्वातंत्र्योत्तरकालीन राजनीति इन सारे मूल्यों को तिलांजलि देते दिखाई देती है। इस काल की कहानी ने आम जन का भ्रमनिराश कर दिया। सत्ता पाने की होड़

Scanned by CamScanner

में कई राजनेता अनैतिकता व्यवहार करने लगे। सत्ता को बरकरार रखने के लिए जगह-जगह विकृत राजनीति का दर्शन होने लगा। कुर्सी पाने की अदम्य लालासा एवं मोह ने सत्ताधारियों को अंधा बना दिया। सत्ताधारियों में दोगलापन, चुनादी षड्यंत्र, स्वार्थांधता, मनमानी, अन्याय, अत्याचार, अराजकता जैसी प्रवृत्तियाँ पनपने लगी। रचनाकार इन सारी प्रवृत्तियों को अनुभूत कर आहत हुआ। उनकी संवेदना जाग उठी और मनमानी व्यवहार करने वाले इन सत्ताधारियों पर अंकुश रखने के लिए कहानीकारों ने अपनी कलम चलाई। कई कहानीकारों ने सेवा के नाम पर मेवा खाने वाले राजनेताओं की पोलखोल दी। जनता ने जिनके हाथों में सत्ता के सूत्र दिए, उन्होंने नियमों एवं सिद्धांतों को तिलांजलि देना शुरू किया। प्रजातांत्रिक व्यवस्था में पनपे भ्रष्टाचार, अनाचार, अनैतिकता के परिणामस्वरूप एक ऐसी पीढ़ी पैदा हुई कि जो सत्ताधारियों को मुँहतोड़ जवाब माँगने लगी। सत्ताधीशों के खिलाफ उठने वाली आवाज को बुलंद करने का प्रयास तत्कालीन कहानीकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से किया। इन कहानीकारों ने वर्तमान राजनीति का यथार्थ चेहरा समाज के सामने ला खडा कर दिया। पर इन कहानियों में राजनीति की इकहरी और यांत्रिक निष्कर्षों वाली सोच पैदा हुई दिखाई देती है; जिसमें वास्तविकता, अनुभव की प्रामाणिकता और परंपरा की अवहेलना नजर आती है।

2.3.2.6 कहानी का सांस्कृतिक क्षेत्र :

संस्कृति की जननी नारी आज अपने परंपरागत संस्कारों, मूल्यों एवं आदर्शों को त्यागकर अपने अस्तित्व एवं अस्मिता को तलाश रही है। मंदिर, पूजा-पाठ, रीति-रिवाजों, उत्सव, पर्व, त्योहारों में पनप रहे सांस्कृतिक मूल्य या संस्कार होटल, पब, क्लब, फैशन में सिमट गए हैं। आधुनिकता की अंधी दौड में भारतीय नारी समयाभाव के कारण अपने बच्चों को शिक्षा, संस्कार, मूल्य और आदर्श नहीं दे पा रही है; जिसके परिणामस्वरूप युवा पीढ़ी में मूल्यों एवं आदर्शों का अभाव पाया जाता है। इन सभी सांस्कृतिक मूल्यों की चिंता कहानी के केंद्र में दिखाई देती है। आज आधुनिकता के नाम पर विलुप्त हो रही मानवीय संवेदना, दो पीढ़ियों के बीच का मूल्य-संघर्ष, संयुक्त परिवारों का विघटन, टूटते-बिखरते दाम्पत्य संबंध, पाश्चात्य सभ्यता में कसमसाती भारतीय संस्कृति आदि का यथार्थ चित्रण कहानी में हो रहा है। कहानी के सांस्कृतिक परिवेश में मनुष्य अपने चिंतन; मनन और विवेक के आधार पर मूल्यों को ग्रहण करता है; जिसके द्वारा वह मानव कल्याण की कामना करता है और अपने आत्म-संस्कारों का विकास भी करता है। वह रूढ़िगत मूल्यों को तिलांजलि देता है और नए मूल्यों को अपनाता है। धर्म, दर्शन, कला, साहित्य, इतिहास तथा शिक्षा-दीक्षा, उत्सव-पर्व-त्योहार आदि मानव मूल्यों के उपादान है। ये सारे सांस्कृतिक मूल्य बचाना कहानीकारों के सामने एक बहुत बड़ी चुनौती है।

Scanned by CamScanner

आज सांस्कृतिक विघटन के परिणामस्वरूप जगह-जगह नैतिक मूल्यों की गिरावट हो रही है। नतीजतन आम जन अपमान, निराशा, हताशा, दोगली नीति, अवहेलना के शिकार हो रहे हैं। कहानीकार इन्हीं प्रवृत्तियों को अपनी अनुभूति के द्वारा अपनी कहानी में अभिव्यक्त कर रहे हैं। सार यह कि संस्कृति में हर समाज की जीवन पद्धति, वेशभूषा, रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार, उत्सव, पर्व और त्योहारों का नया आविष्कार शामिल है; जिससे मनुष्य मनुष्य बन जाता है। मानवता की हिमायत करने वाला यही सांस्कृतिक विचार कहानी का कथ्य है।

2.3.2.7 यात्रा वृत्तांत का सामाजिक क्षेत्र :

जिस प्रकार मानव जीवन के विविध क्षेत्र हैं, उसी प्रकार यात्रा वृत्तांत के भी विभिन्न क्षेत्र हैं। इनमें सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्र प्रधान है। जिस प्रकार फूल मालाओं में बिनने के बाद सुंदर फूलमाला बन जाती है, उसी प्रकार सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्र बिनने के बाद सुंदर यात्रा साहित्य का जन्म हो जाता है। यात्रा साहित्य में ये विभिन्न क्षेत्र पाठकों को सच्चाई की अनुभूति देते हैं। यात्रा साहित्य के सामाजिक क्षेत्र का वर्णन कई रूपों में प्रस्तुत होता है।

यात्रा वृत्तांत लेखन में सिर्फ यात्राओं का अंकन नहीं होता, बल्कि वह प्रकृति-संस्कृति के साथ-साथ समाज का भी चित्रण होता है। यात्रा वृत्तकार सायास-अनायास विभिन्न देशों के विभिन्न सामाजिक परिवेश का अंकन करता है। यात्रा साहित्य से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि भारतीय और पाश्चात्य समाज में सुख-दुःख के प्रसंगों में साझेदार बनने के मापदंड भी अलग-अलग हैं। लेखक यात्रा साहित्य में सामाजिक परिवेश, आचार-विचार और व्यवहार को अभिव्यक्त कर सामाजिक पद्धतियों का रेखांकन करता है और यात्रा स्थानों के समाज का निरीक्षण-परीक्षण के साथ अपने समाज से तुलना भी करता है। वहाँ के समाज की आशा-आकांक्षा, रुचि-अरुचि, उन्नति-अवनति तथा हर्ष-विषाद का दर्शन कराता है और यात्रा स्थानों की सामाजिक विशेषताओं पर प्रकाश डालता है। यात्रा वृत्तांत लेखक यात्रा साहित्य में भावुकता, स्वाभाविकता, शालीनता, सहजता, हर्ष, प्रेम, करुणा, मैत्री, सभ्यता, संस्कृति, भाषा आदि सामाजिक पहलुओं का चित्रण करता है।

यात्रा साहित्य में प्राकृतिक अनुपम सौंदर्य के मिलाफ से समाजिक परिवेश का प्रस्तुतिकरण अत्यंत सूक्ष्म एवं प्रभावोत्पादक ढंग से किया जाता है। समाज में प्रचलित रूढ़ि-परंपरा, रीति-रिवाज, अलग-अलग प्रथाएँ जब समय के साथ बदल जाती है, तब समाज में आम जन का जीवन दुभर बन जाता है। आम जन सामाजिक परिवर्तन के साथ परिवर्तित नहीं हो पाते। इसी कारण जब व्यक्ति और समाज के बीच संघर्ष शुरू हो जाता है, तब समाज में अव्यवस्था जन्म लेती है। इसी अव्यवस्था

Scanned by CamScanner

का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष परिणाम व्यक्तिगत आचार-विचार, पारिवारिक जीवन और सामाजिक व्यवहार पर होता है। पुरानी रूढ़ि-परंपरा, जाति-पाँति, भेदभाव, धार्मिक बंधन, कुरीतियाँ जब आम जन के मार्ग में रोडा बन जाते हैं, तब संवेदनशील यात्रा वृत्तांतकार इन सारी कुरीतियों, कमियों, खामियों और सड़ी-गली व्यवस्था की पोल खोल देता है। इस सामाजिक अव्यवस्था को सुव्यवस्था में तबदील करने के लिए लेखक अपनी मर्मभेदी लेखनी के माध्यम से निरंतर प्रहार करता रहता है, ताकि स्वस्थ समाज का निर्माण हो सके। हर देश के समाज में दो वर्ग नजर आते हैं-उच्च वर्ग और निम्न वर्ग। उच्च वर्ग हमेशा ऐय्याशी जीवन जीता है, तो निम्न वर्ग दो वक्त की रोटी के लिए मोहताज हो जाता है। ऐसी स्थिति में यात्रा वृत्तांतकार समाज के उच्च वर्ग के ऐय्याशी की पोल खोल देता है और निम्न वर्ग की कथा-व्यथा अंकित कर देता है। यात्रा साहित्य में सामाजिक परिवेश का यथार्थ चित्रण पाठक को सोचने और विचार करने के लिए बाध्य कर देता है और सामाजिक परिवर्तन की, हिमायत की भी मांग करता है।

2.3.2.8 यात्रा वृत्तांत का राजनीतिक क्षेत्र :

यात्रा वृत्तांत और राजनीति का गहरा रिश्ता है। ये दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। आदिकालीन यात्रा साहित्य में राजाओं की वीरता के साथ-साथ राजनीति का वर्णन दिखाई देता है। पल-पल बदलती राजनीति यात्रा साहित्य विधा पर अमिट छाप छोड़ देती है। पहले दोनों लोकमंगल की भावना से प्रेरित थे। समाज को खुशहाल बनाने और उसे आनंद में डूबो देने की कोशिश अपने-अपने ढंग और साधनों से दोनों ही करते हैं। राजनीति अपने कार्यक्रमों और नीतियों को प्रस्तुत करती है और सत्ता हाथियाने के लिए संघर्षरत रहती है, लेकिन यात्रा साहित्य सत्ता के लिए संघर्ष नहीं करता। वह वास्तविक जीवन को देखता है, भोगता है, अनुभव प्राप्त करता है और जनता की वकालात करता है। इतना ही नहीं, वह जनता की खुशियों और तकलीफों को वाणी देता है, अन्याय के खिलाफ आवाज बुलंद कर देता है और न्याय की गुहार लगाता है। यात्रा लेखक प्रकृति, संस्कृति, समाज और समाज की राजनीति को कलात्मक बिम्बों के सहारे सर्जित करता है। यात्रा साहित्य विचारधारात्मक अधिरचना का अंग होता है, बल्कि राजनीति वर्ग-संघर्ष, सत्ता-प्राप्ति के लिए किए जाने वाले संघर्ष का प्रत्यक्ष रूप। जिन यात्रा स्थानों का समाज अच्छा होता है, वहाँ की राजनीति भी अच्छी होती है। यात्रा साहित्य और राजनीति दोनों गतिशील-प्रगतिशील और प्रतिक्रियावादी होते हैं। यात्रा साहित्य और राजनीति तभी शुभ होते हैं, जब वे लोकमंगल के रास्ते पर अग्रसर होते हैं। समाज को निराशाजन्य अंधकार से निकालकर आनंद की रोशनी में नहालाने का काम यदि यात्रा साहित्य और राजनीति के द्वारा संपन्न होता है, तो यही स्थिति समाज के लिए मंगलदायक होती है। यदि राजनीति षड्यंत्रकारी हो तो इतिहास इस बात का गवाह है कि राजनीति के कारण ही राजा

Scanned by CamScanner

राम को भी अपना राज्य छोड़ना पड़ा था। राजनीति के कारण यात्रा साहित्य में अनेक बदलाव दिखाई देते हैं। यात्रा साहित्यकार अपने समय की राजनीतिक भावनाओं और मान्यताओं का अध्ययन जरूर करता रहता है। यदि राजनीतिं समाज पर हावी होती है, मनमानी करने लगती है और अमानवीय व्यवहार करने लगती है, तो यात्रा साहित्यकार अपनी लेखनी की ताकत से समाज का साथ देता है। राजनीतिक यात्राओं से तात्पर्य केवल उन यात्राओं से है कि जो दो भिन्न भाषा-भाषी समाज राजनीतिक मसले सुलझाने, राजनीतिक संबंध ठीक करने, राजनीतिक फैसले करने के लिए एकसाथ आते हैं और उन मसलों को हल करते हैं। यात्रा साहित्यकार अपनी यात्रा के दौरान विदेशी राजनीति और देशी राजनीति की तुलना करते हुए अच्छाई का समर्थन करता है और बुराई का विरोध करता है। देश की राजनीति यदि आम जन पर अन्याय कर रही है तो यात्रा साहित्यकार उसके पक्ष में खड़ा हो ठाकता है।

2.3.2.9 यात्रा वृत्तांत का सांस्कृतिक क्षेत्र :

वस्तुत: संस्कृति मनुष्य की अमूल्य निधि है। हर देश की अपनी-अपनी संस्कृति होती है। लेकिन कुछ देशों के कई सांस्कृतिक पहलू मिलते-जुलते होते हैं, तो कुछ बिल्कुल भिन्न होते हैं। यात्रा साहित्य से सिर्फ यात्रा के प्राकृतिक अनुभव ही नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक माहौल जानने-पहचाने का सुअवसर मिल जाता है। किसी भी देश की संस्कृति को जानने-पहचाने और उसका अध्ययन-अध्यापन करने के लिए सांस्कृतिक यात्राओं का आयोजन किया जाता है। यात्रा साहित्य से यात्रा स्थानों के सांस्कृतिक पहलुओं का आदान-प्रदान होता है। दो राष्ट्रों की संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए भी विभिन्न यात्राओं का आयोजन किया जाता है।

भारतीय संस्कृति में एक-दूसरे के सुख-दुःख में साझेदार बनना 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना का परिचयाक है। भारतीय संस्कृति मानवीय संवेदना एवं मानवता की परिचायक है। दो भिन्न भाषा-भाषी समाज की संस्कृति एक-दूसरे को जानने-पहचाने का सुअवसर यात्रा साहित्य से आसानी से मिल जाता है। यात्रा साहित्यकार अपने यात्रा साहित्य में वेशभूषा, रूढ़ि-परंपरा, रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज, उत्सव, पर्व, त्योहार आदि सांस्कृतिक पहलुओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है। भारत में यात्रियों की कभी कमी नहीं रही। नतीजतन तिब्बत, चीन, मलाया, बर्मा आदि सुदूरवर्ती द्वीपों में भारतीय संस्कृति की गूँज सुनाई पड़ती है। यह गूँज यात्रा साहित्य में लिपिबद्ध होने से भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार सबदूर हो चुका है। यात्रा साहित्य में लेखक अपने देश, गाँव की सभ्यता, रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा के तौर-तरीके, अतिथ्य-सत्कार की परंपराएँ आदि का यात्रा स्थानों की संस्कृति से तुलना करता रहता है और सांस्कृतिक विरासत का प्रभाव रेखांकित

Scanned by CamScanner

करता रहता है। लेखक का अपनी संस्कृति, सांस्कृतिक धरोहर और सामाजिक जड़ों के प्रति गहरा लगाव रहता है। यही गहरा लगाव वह अपने यात्रा वृत्तांत में आकलन से, संवादों से और सौंदर्य प्रत्ययों से विवेकशील अस्मिता के साथ प्रकट करता हैं। लेखक की संस्कृति विषयक सोच विस्तृत, उदार और गहरी होने पर दो देशों के बीच के संबंधों में मजबूती आ जाती है। इससे दोनों संस्कृतियाँ एक-दूसरे का आदर-सत्कार करने लगती है। यात्रा वृत्तांत में लेखक रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान, रूढ़ि-परंपराओं को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करता है और विचार-चिंतन से अलग ही रंग भर देता है। संस्कृति एक ऐसा पर्यावरण है; जिसमें रहते हुए व्यक्ति सामाजिक प्राणी बन जाता है और प्रकृति को अपने अनुकूल बनाने की कोशिश करता है। यही संस्कृति एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से और एक समूह को दूसरे समूह से और एक समाज को दूसरे समाज से अलग कर देती है। यात्रा वृत्तांतकार इसी सांस्कृतिक पर्यावरण को अंकित करता है। मानव को जितनी मानवीय परिस्थितियाँ प्रभावित करती है, उन सभी की संपूर्णत: संस्कृति कहलाती है। लेखक यात्रा वृत्तांत में इन्हीं मानवीय परिस्थितियों को पूर्णरूपेन रेखांकित करता है।

लेखक ऐसी सांस्कृतिक व्यवस्था को यात्रा वृत्त में समेटता है; जिनमें जीवन के प्रतिमान, व्यवहार के तरीके, अनेकानेक भौतिक-अभौतिक प्रतिमान, परंपराएँ, विचारधारा, सामाजिक मूल्य, मानवीय क्रिया-प्रतिक्रियाएँ और आविष्कार शामिल होते हैं। मानव जीवन के दिन-प्रतिदिन के आचार-विचार, जीवन शैली, कार्य-व्यवहार, संस्कार, नीतिगत कार्य-कलाप, दार्शनिकता, कलात्मकता, स्थापत्य कला, संगीतात्मकता आदि सांस्कृतिक पहलुओं को यात्रा वृत्तांतकार यात्रा साहित्य में शब्द बद्ध कर देता है। सांस्कृतिक कला, विद्या और साहित्य से मनुष्य को जीवन जीने की प्रेरणा मिल जाती है। सार यह कि मनुष्य की सामाजिक विरासत या मनुष्य की संचित सृष्टि का नाम संस्कृति है। यात्रा साहित्य के सांस्कृतिक पक्ष में यात्रा साहित्यकार एक ओर मनुष्य के आचार-विचार, भावना, मूल्य, विश्वास, मान्यता, चेतना, प्रेरणा, भाषा, ज्ञान, कर्म, धर्म आदि अमूर्त तत्त्व को मूर्त रूप देता है, तो दूसरी ओर वहाँ खान-पान, वेशभूषा, रहन-सहन, मानव जीवन की पद्धतियाँ और भौतिक जन-जीवन की सभ्यताओं को भी अपनाता है। दरअसल यात्रा वृत्तांत से सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता है और वैश्विक स्तर पर मानवीय संबंध दृढ़ होते हैं।

2.4 सारांश

1) कविता लेखन में भाव या विचार कार्यरत होते हैं। ये कविता में ही अंतर्निहित होते हैं। कविता में भाव, बुद्धि, कल्पना और शैली का कलापूर्ण समन्वय होता है। भाव ही कवि कल्पना का प्रेरक तत्त्व है, जो कवि कल्पना को साक्षात् करता है।

Scanned by CamScanner

2) मानव जीवन में मानवता या मानवीय मूल्य सर्वोपरि होते हैं। यही मूल्य सार्थक एवं सारवान होते हैं; जो कि साहित्य या काव्य के केंद्र में निहित होते हैं। मानवीय मूल्य ही साहित्य के माध्यम से समाज में विवेक पैदा करने की दृष्टि से सहायक होते हैं। इन्हीं मानवीय मूल्यों को बचाने या उसका प्रचार-प्रसार करने की दृष्टि से काव्य महत्त्व रखता है। आखिरकार साहित्य की उपयोगिता इन्सान को इन्सान बनाने में ही तो है।

3) कहानी संक्षिप्त आकार का ऐसा आख्यान है; जो पाठकों पर भावपूर्ण प्रभाव डाल सके। यह मानव जीवन के किसी एक पक्ष, प्रसंग या घटना का संवेदनात्मक चित्रण है। यह घटना या प्रसंग मौलिक जगत् या मानसिक जगत् से उठते हैं और कहानी के माध्यम से आकार लेते हैं।

4) कहानी मानसिक रहस्य को खोलती है, जीवन के मार्मिक पक्षों का उद्‌घाटन करती है, जीवन के सत्य साक्षात् करती है, मानव चरित्रों का उद्‌घाटन करती है, जीवन की विभिन्न समस्याओं को उठाती है और उसका समाधान भी प्रस्तुत करती है। इन सभी तथ्यों की दृष्टि से कहानी का साहित्यिक महत्त्व तथा उपयोगिता अनिवार्य रूप में स्वीकारनी पड़ती है।

5) देश-विदेश में घटित घटना, देखे दृश्य, प्राप्त अनुभूतियों का वृत्तांत लिखना ही यात्रा वृत्तांत है। इसमें कल्पना के बजाय यथार्थ को स्थान दिया जाता है। सौंदर्यबोध की तलाश में मनुष्य उत्साह भाव से प्रेरित होकर जब यात्रा करता है, तब उसका मुक्त भाव से रेखांकन होता है। यात्रा वृत्तांतकार यात्रा स्थानों से ग्रहण किए गए प्रेम, सौंदर्य, भाषा, यादें और जीवन के खट्टे-मिट्टे अनुभव अपनी रचना में साझा करते हैं; जो यात्रा साहित्य नाम से जाने जाते हैं।

6) यात्रा साहित्य मनुष्य की मानवता को फलने-फूलने का अवसर जरूर देती है। धर्म एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसारक, ऋषि-मुनि, साधु-संत तथा आचार्यों ने भी यात्राएँ की और वे संस्कृति के संवाहक रहें। आखिरकार यात्रा-साहित्य से पाठक एक-दूसरे की संस्कृति से परिचित हो जाते हैं। इतना ही नहीं, वे प्रकृति का मनोहारी चित्रण पढ़कर चेतनामयी एवं आनंददायी बन जाते हैं।

7) यात्रा के बाद अपने समृद्ध अनुभव लेखन के माध्यम से शब्दबद्ध कर लेखक दूसरों को बाँटता है, दूसरों की जिज्ञासा एवं कौतुहल को संतुष्ट कर देता है। जब ये अनुभव यात्रा वृत्तांत का आकार लेते हैं, तब वे दूसरे यात्री के लिए दिशादर्शक बन जाते हैं।

Scanned by CamScanner

8) साहित्य ही समाज को सत्य, शिव और सुंदरता से युक्त सुसंस्कृत बनने की प्रेरणा देता है। प्रेरणा की दृष्टि से या प्रबल आवेग पैदा करने की दृष्टि से समाज और काव्य अर्थात् साहित्य का अन्योन्याश्रित संबंध रहा है। कोई भी कवि अपने सामाजिक दायित्व से मुँह मोड़ नहीं सकता है! इसलिए समाज के अच्छे और बुरे पहलू; जो कवि ने अनुभव किए हैं, वही कविता का विषय बन जाते हैं। जब तक कविता का सामाजीकरण और साधारणीकरण नहीं होता, तब तक कविता का मूल उद्देश्य सफल नहीं होता है।

9) कवि के मन-मस्तिष्क पर राजनीतिक चिंतन की गहरी छाप हो, तो वह अपनी कविता में राजनीतिक विचारों की पहल करता है। ऐसी पहल के माध्यम से कवि का राजनीतिक दृष्टिकोण अभिव्यक्त होता है; जो तत्कालीन समाज में राजनीतिक विचारधारा को पिरोने का कार्य करता है। ऐसे विचार ही समाज में राजनीतिक तख्त को पलट देते हैं, सत्ता को उथल-पुथल कर देते हैं।

10) कविता के सांस्कृतिक पक्ष में व्यक्ति का रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज, वेशभूषा, उत्सव, पर्व, त्योहार आदि की कथा-व्यथा को रेखांकित किया जाता है। कविता तत्कालीन देशकाल की संस्कृति की परिचायक होती है। कविता की संस्कृति में हर समाज की जीवन पद्धति, रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार, नए आविष्कार शामिल होते हैं, जिससे मनुष्य अमानवीय से मानवीय बन जाता है, असभ्य से सभ्य बन जाता है। यही सांस्कृतिक विचार कविता प्रचारित एवं प्रसारित करती रहती है।

11) आज की युवा पीढ़ी पुराने मूल्यों को त्याग कर नए जीवन मूल्यों का सर्जन कर रही है। इसी वजह से परिवार समाज से धीरे-धीरे कटता जा रहा है। अत: मानवीय मूल्यों को त्यागकर स्वार्थ, लोभ, ईर्ष्या, मोह, माया का वरण हो रहा है। वर्तमान कहानी में सामाजिक, नैतिक मापदंडों एवं मूल्यों के बदलते स्वरूप की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। इन्हीं मूल्यों को बचना सामाजिक कहानीकारों के सामने बहुत बड़ी चुनौती है। सामाजिक बंधनों और सामाजिक शिष्टाचार के नियमों का पालन कर सामाजिक कहानीकर इसी चुनौती का सामना कर रहे हैं।

12) आज कहानीकार सत्ताधारियों का दोगलापन, चुनावी षड्यंत्र, स्वार्थांधता, मनमानी, अन्याय, अत्याचार, अराजकता जैसी प्रवृत्तियों पर अपनी कहानी में प्रहार करने लगा है। रचनाकार इन सारी प्रवृत्तियों को अनुभूत कर आहत होता है, जिससे उनकी संवेदना जाग उठती है और मनमानी व्यवहार करने वाले इन सत्ताधारियों पर अंकुश रखने के लिए इन्हीं

Scanned by CamScanner

कहानीकारों की कलम उठने लगी है। कई कहानीकारों ने सेवा के नाम पर मेवा खाने वाले राजनेताओं की भी भरसक पोल खोल दी है।

13) आज सांस्कृतिक विघटन के परिणामस्वरूप जगह-जगह नैतिक मूल्यों में गिरावट आ रही है। नतीजतन आम जन अपमान, निराशा, हताशा, दोगली नीति, अवहेलना के शिकार हो रहे हैं। कहानीकार इन्हीं प्रवृत्तियों को अपनी अनुभूति के द्वारा अपनी कहानी में अभिव्यक्त कर रहा है।

14) यात्रा साहित्य में सामाजिक परिवेश का यथार्थ चित्रण पाठक को सोचने और विचार करने के लिए बाध्य कर देता है और सामाजिक परिवर्तन की हिमायत भी करता है।

15) यात्रा साहित्यकार अपनी यात्रा के दौरान विदेशी राजनीति और देशी राजनीति की तुलना करते हुए अच्छाई का समर्थन करता है और बुराई का विरोध करता है। देश की राजनीति यदि आम जन पर अन्याय कर रही है, तो यात्रा साहित्यकार उसके पक्ष में खड़ा होता है।

16) यात्रा साहित्य के सांस्कृतिक पक्ष में यात्रा साहित्यकार एक ओर मनुष्य के आचार-विचार, भावना, मूल्य, विश्वास, मान्यता, चेतना, प्रेरणा, भाषा, ज्ञान, कर्म, धर्म आदि अमूर्त तत्त्व को मूर्त रूप देता है, तो दूसरी ओर वहाँ खान-पान, वेशभूषा, रहन-सहन, मानव जीवन की पद्धति और भौतिक जन-जीवन की सभ्यता को भी अंकित करता है। दरअसल यात्रा वृत्तांत से सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता है और उससे वैश्विक स्तर पर मानवीय संबंध और भी दृढ़ होते हैं।

2.5 पारिभाषिक शब्द और शब्दार्थ

1. **घुमक्कड** : बहुत अधिक घूमनेवाला, रमंता।
2. **वाङ्मय** : साहित्य।
3. **साधारणीकरण** : साधारण रूप में लाना, रस निष्पत्ति की तादाम्यपरक स्थिति।
4. **तादात्म** : तल्लीनता, एक जान होना।
5. **यात्रा वृत्तांत** : यात्रा का वृत्तांत।
6. **कहानी** : मनगढंत बात, कथा।
7. **काव्य** : कविता, कवि की रसात्मक रचना।
8. **परिहास** : जोर की हँसी, हँसी-मजाक।

Scanned by CamScanner

2.6 स्वयं–अध्ययन के लिए प्रश्न

1. अंग्रेजी में साहित्य के लिए प्रचलित Literature शब्द ..... धातु से बना है।

   (अ) अक्षर (ब) शब्द (क) लेटर (ड) लिटुआ

2. विलियम शेक्सपियर के अनुसार कवि ..... ही आखिरकार अज्ञात वस्तुओं और विचारों को आकार देती है।

   (अ) कल्पना (ब) भावना (क) बुद्धि (ड) प्रतिभा

3. कवि हृदय में ..... का प्रबल आवेग ही कविता निर्मिति का प्रधान कारण है।

   (अ) भावना (ब) कल्पना (क) प्रतिभा (ड) बुद्धि

4. कॉलरिज ..... को उत्तमोत्तम शब्दों का उत्तमोत्तम क्रमविधान मानते हैं।

   (अ) कविता (ब) कहानी (क) यात्रा वृत्तांत (ड) रेखाचित्र

5. पंडितराज जगन्नाथ रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाले ..... को काव्य कहते हैं।

   (अ) शब्द (ब) वाक्य (क) पद (ड) ध्वनि

6. सिंगमंड फ्रायड ..... का संबंध मानव मन की कुंठाओं से जोड़ते हैं।

   (अ) काव्य (ब) कहानी (क) यात्रा वृत्तांत (ड) रेखाचित्र

7. आचार्य विश्वनाथ रसयुक्त ..... को काव्य मानते हैं।

   (अ) शब्द (ब) वाक्य (क) पद (ड) ध्वनि

8. ..... 'सबसे उत्तम कहानी वह होती है; जो किसी मनोवैज्ञानिक सत्य पर आधारित हो।

   (अ) मुंशी प्रेमचंद (ब) जैनेंद्र (क) अज्ञेय (ड) इलाचंद जोशी

9. ..... के अनुसार 'कहानी एक निश्चित लक्ष्य या प्रभाव को लेकर लिखा हुआ नाटकीय आख्यान है।'

   (अ) श्यामसुंदर दास (ब) प्रेमचंद (क) प्रसाद (ड) पंत

10. ..... कहानी की प्रमुख विशेषता है।

    (अ) मनोवैज्ञानिकता (ब) वैज्ञानिकता (क) भावप्रवणता (ड) संप्रेषणीयता

Scanned by CamScanner

11. चरित्र और कथानक में ..... होनी चाहिए।

(अ) स्वाभाविकता (ब) समन्वय (क) एकता (ड) क्रमबद्धता

12. कहानी में क्रमबद्धता के साथ ..... होनी चाहिए।

(अ) गतिशीलता (ब) प्रवाहमयता (क) श्रृंखलाबद्धता (ड) लय

13. महापंडित राहुल सांकृत्यायन यात्रा साहित्य पर ..... किताब लिखी।

(अ) घुमक्कड शास्त्र (क) मेरी तीर्थ यात्रा

(ब) वन यात्रा (ड) मेरी कैलाश यात्रा

14. महापंडित राहुल सांकृत्यायन के अनुसार ..... एक रस है।

(अ) घुमक्कडी (ब) शोक (क) श्रृंगार (ड) करुण

15. कठिन मार्गों को तय करने के बाद नए स्थानों पर पहुँचकर हृदय में ..... पैदा होता है।

(अ) भावोद्रेक (ब) विद्रोह (क) बवाल (ड) बवंडर

2.7 स्वयं-अध्ययन प्रश्नों के उत्तर।

1. (क) लेटर
2. (अ) कल्पना
3. (अ) भावना
4. (अ) कविता
5. (अ) शब्द
6. (अ) काव्य
7. (ब) वाक्य
8. (अ) मुंशी प्रेमचंद
9. (अ) श्यामसुंदर दास
10. (अ) मनोवैज्ञानिकता
11. (अ) स्वाभाविकता
12. (अ) गतिशीलता

Scanned by CamScanner